SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 22 • ISSUE 05 • JULY 2023

हिन्दी मासिक

जुलाई 2023

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

मुसलमानों की ज़िम्मेदारी

मुसलमानों को बताना चाहिए कि देखो इस मुल्क को तबाही से बचाना तुम्हारी ज़िम्मेदारी है, तुम बा ईमान, बा उसूल और बा किरदार बन कर यहाँ रहो, अगर तुम यहाँ पर हज़रत युसुफ़ अलैहिस्सलाम का नमूना पेश करोगे, तो फिर वह वक़्त आएगा कि अहम से अहम और नाज़ुक से नाज़ुक तर और दुशवार से दुशवार तर ज़िम्मेदारी तुम्हारे सुपुर्द की जायेगी।

(हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
ह़ज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई ह़सनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 यु.एस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007

जुलाई 2023 वर्ष 22 अंक 05

इस्लाम की हिफ़ाज़त

इस्लाम की हिफ़ाज़त के नारे तो बहुत बुलन्द किये जाते हैं मगर अमली पहलुओं से हम ख़ुद दूर रहते हैं। इस्लाम कोई स्टेचू नहीं जिसकी हिफ़ाज़त के लिए लाव लश्कर की ज़रूरत हो, आप अपने अन्दर इस्लाम समो लीजिए आप भी सुरक्षित हो जायेंगे और इस्लाम भी सुरक्षित हो जाएगा।

शेख़ुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी रह0

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताह़ अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
हरमैन शरीफ़ैन	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
इन्सान की तलाश	मौलाना अबुल हसन अली नदवी रह0	11
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	17
बच्चों में फैलती अनैतिकता	मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी	19
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	21
मुस्लिम पर्सनल लॉ, ज़रूरत और	इदारा	24
तुर्की का इलेक्शन	इं0 जावेद इक़बाल	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	26
ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ	जमाल अहमद नदवी	28
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	30
दीन धर्म की बुनियादें	इं0 जावेद इक़बाल	32
माँ का मर्तबा	नज़मुस्साक़िब अब्बासी नदवी	34
मुल्क की ताक़त का सही स्रोत	मौलाना अली मियाँ नदवी	36
उर्दू के आधार स्तम्भ	डॉ0 मुहम्मद अहमद	37
गर्मियों में खाएं शहतूत	डॉ0 चारू गाबा, लखनऊ	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात की खिदमत में	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-हूदः-

अनुवादः—

क्या वे कहते हैं कि इन्होंने इसको गढ़ लिया है? कहिए तो तुम गढ़ कर इस जैसी दस सूरतें ही बना लाओ और अल्लाह के सिवा जिसको बुला सकते हो बुला लो अगर तुम अपने दावे में सच्चे हो(13) फिर अगर वे तुम्हारा कहा नहीं करते तो जान लो कि वह तो अल्लाह के ज्ञान के अनुसार ही उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई पूज्य नहीं तो क्या अब मानते हो[1](14) जो कोई दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी शोभा चाहता हो तो हम उसी में उसके कर्मों का बदला पूरा—पूरा दे देंगे और उसमें उनके साथ कुछ कमी नहीं की जाएगी(15) ऐसों के लिए आख़िरत में आग के सिवा और कुछ नहीं है और दुनिया में उन्होंने जो कुछ किया—धरा सब बर्बाद हुआ और उनके सब काम मिट्टी में मिल गये(16) भला जो व्यक्ति अपने रब के खुले रास्ते पर है और उससे उसको गवाही मिलती है और इससे पहले मूसा की किताब से भी गवाही मिल चुकी है जो राह दिखाने वाली और रहमत है वही लोग इस क़ुर्आन पर ईमान रखते हैं और जो भी गिरोह इसका इनकार करेंगे तो उनके लिए दोज़ख ही तय है तो आप इसके बारे में थोड़ा भी संदेह में न पड़ें बेशक यह आपके पालनहार की ओर से सत्य है लेकिन अधिकतर लोग मानते नहीं(17) उससे बढ़ कर अन्याय करने वाला कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे? ऐसों को उनके पालनहार के सामने पेश किया जाएगा और गवाह कहेंगे यही लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ बोला था, याद रखो! अन्याय करने वालों पर अल्लाह की फिटकार है(18) जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कमी की खोज में रहते हैं और वही हैं जो आख़िरत का इनकार करने वाले हैं[2](19) सम्भव नहीं कि यह लोग ज़मीन में भी अल्लाह को बेबस कर दें और उनके लिए अल्लाह के अलावा कोई मददगार नहीं, उनके लिए अज़ाब दोगुना कर दिया जाएगा, न ही उनके बस में सुनना था और न ही वे देखते थे(20) यही लोग हैं जिन्होंने अपना घाटा किया और जो कुछ वे गढ़ा करते थे वह सब हवा हो गया(21) निश्चित रूप से यही लोग आख़िरत में सबसे अधिक घाटा उठाने वाले होंगे[3](22) बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए और वे अपने पालनहार की ओर झुक गये वही जन्नत वाले हैं वे उसी में हमेशा रहेंगे(23) दोनों पक्षों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक अंधा और बहरा और एक देखता और सुनता, क्या दोनों का हाल एक ही जैसा है, क्या फिर भी तुम ध्यान नहीं करते(24) और बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम के पास भेजा (उन्होंने कहा कि) मैं तुम्हें साफ़— साफ़ डराता हूँ(25) कि केवल अल्लाह की पूजा करो, मुझे तुम पर दुखद दिन के अज़ाब का डर है(26) तो सम्मानित लोग बोले जो उनकी क़ौम में इनकार करने वाले थे कि तुम तो हमें अपने जैसे इंसान दिखाई पड़ते हो और हम तो देखते हैं कि तुम्हारी बात वही लोग मानते हैं

जो हममें सबसे घटिया हैं (और वह भी) शिथिल राय क़ायम करके और हमें अपने ऊपर तुम्हारी कोई बड़ाई दिखाई नहीं पड़ती बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ही समझते हैं[4](27) उन्होंने कहा कि ऐ मेरी कौम के लोगो! तुम्हारा क्या विचार है अगर मैं अपने पालनहार की ओर से खुले प्रमाण के साथ हूँ और उसके पास से मुझे रहमत मिलती है फिर वह तुम्हारी नज़रों से ओझल है तो क्या मैं उसको तुम्हारे सिर मढ़ दूँ जब कि तुम उसको सख़्त ना पसंद करते हो[5](28)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. दस सूरतें कुरआन जैसी बना कर लाने की चुनौती दी गई, बाद में केवल एक ही सूरत बना कर लाने को कहा गया लेकिन मुश्रिक लोग जिनको अपनी शुद्ध भाषा पर गर्व था इस चुनौती को स्वीकार न कर सके और बेबस हो कर रह गए, उन्होंने इस्लाम को मिटाने के सारे प्रयास कर डाले, मगर यह काम उनसे हो ही न सका, मगर इसके बावजूद हठधर्मी पर जमे रहे इसलिए कि उनके सामने केवल दुनिया ही थी, अल्लाह तआला आगे फ़रमाते हैं कि उनके लिए दुनिया ही में सब कुछ है और आखिरत में सिवाय दोज़ख़ के कुछ नहीं।

2. पवित्र कुर्आन खुद इसकी दलील है और तौरते में भी इसकी भविष्यवाणी मौजूद है, तो जो इस कुरआनी रास्ते को अपनाता है वह उसको मानता है और जो नहीं मानते वही हैं जो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और इसके लिए उपाय तलाशते हैं, यही लोग दोज़ख़ी हैं।

3. अल्लाह ने उनको सुनने और देखने की शक्ति दी थी लेकिन उन्होंने अल्लाह की किताबों और पैग़म्बरों के बारे में अपने आपको अंधा व बहरा कर लिया और घाटा उठा गए, आगे इसी का और विस्तार है कि क्या ऐसे अंधे बहरे उनके बराबर हो सकते हैं जो देखते और सुनते हैं।

4. हर पैग़म्बर पर शुरु में ईमान लाने वाले कमज़ोर ही होते हैं, हिरक़्ल ने अबू सुफ़ियान से पूछा था कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाने वालों में अधिकतर कौन लोग हैं? अबू सुफ़ियान ने कहा कि क़ौम के कमज़ोर लोग, हिरक़्ल बोला कि नबी पर ईमान लाने वालों में जो लोग पहल करते हैं वे कमज़ोर ही होते हैं।

5. यानी मैं दिखा तो नहीं सकता और न ज़बरदस्ती कर सकता हूँ, जितना मैं कर सकता था मैंने कर दिया। ◆◆

नवास-ए-रसूल हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु

हाफ़िज़ डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी रह0
(भूतपूर्व संपादक)

सहाबि-ए-रसूल हुसैन, नवास-ए-रसूल हुसैन।
नबी के महबूब हुसैन, रब के महबूब हुसैन।।
न झुके ज़ालिम, इब्ने ज़ियाद के आगे।
हो गये शहीद, शहीद मक़बूल हुसैन।।
बड़े शक़ी थे, जिन्होंने शहीद किया उनको।
दोज़ख़ी हैं जिन्होंने शहीद किया उनको।।
न सोचा हुसैन आल हैं किस की।
कैसे हिम्मत की, जिन्होंने शहीद किया उनको।।
हमज़ह और अब्बास, सफीया, अली फ़ातिमा हसन हुसैन।
अज़वाज नबी, औलाद नबी, हम सबसे अक़ीदत रखते हैं।।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

सुलह के लिए अल्लाह के रसूल सल्ल0 की कोशिश और मेहनतः—

हज़रत सहल बिन सअद साइदी रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़बर मिली कि बनू अम्र बिन औफ़ की आपस में कोई बात हो गई है, आप सल्ल0 कुछ लोगों के साथ उनके बीच सुलह कराने के लिए निकले, वहाँ पर आप सल्ल0 को देर हो गई और नमाज़ का समय हो गया, हज़रत बिलाल रज़ि0 हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के पास आए और कहा कि ऐ अबू बक्र! आप सल्ल0 को देर हो गई और नमाज़ का वक़्त करीब आ गया है, क्या आप नमाज़ पढ़ा देंगे? हज़रत अबू बक्र रज़ि0 ने कहा हाँ! अगर तुम चाहो।

(बुखारी व मुस्लिम)

हज़रत सहल बिन सअद ही से रिवायत है कि ''कुबा'' के कुछ लोगों की आपस में लड़ाई हो गई, (बात इतनी बढ़ी कि) पत्थर बाज़ी शुरु हो गई, अल्लाह के रसूल सल्ल0 को जब इसकी जानकारी मिली तो आप सल्ल0 ने कहाः हमारे साथ चलो ताकि हम उनके बीच सुलह करा दें।

(बुखारी)

नर्मी और आसानी का मामला अपनाने पर बलः—

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि हुजूर सल्ल0 ने दो लड़ने वालों की आवाज़ सुनी, दोनों की आवाज़ें बुलन्द हो रही थीं, उनमें का एक किसी मुतालबे में कमी कर रहा था और नर्मी का मामला करने के लिए कह रहा था और दूसरा कसम खा कर इन्कार कर रहा था कि नहीं करूँगा, आप सल्ल0 उन दोनों के पास आए और फरमायाः भलाई न करने के लिए खुदा की कसम खाने वाला कहाँ है? उसने कहाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल0 मैं हूँ, इसको जो पसन्द है मैं उसके लिए तैयार हूँ।

(बुखारी व मुस्लिम)

इन्सान के हर जोड़ पर सद्का वाजिब हैः—

हज़रत अबू हुरैरः रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया हर रोज सूरज निकलने के बाद इन्सान के हर जोड़ पर एक सदक़ा वाजिब होता है, अगर कोई दो आदमियों के बीच सुलह करा देता है तो यह भी सद्क़ा है, सवारी पर सवार होने में आदमी की मदद कर देता है, या उसका सामान उठा कर उसे दे देता है तो सद्क़ा है, भली बात कहना भी सद्क़ा है और हर क़दम जो नमाज़ के लिए उठाता है यह भी सद्क़ा है, रास्ते से कष्टदायक चीज़ को हटाना भी सदक़ा है।

(बुखारी व मुस्लिम)

सुलह कराने वाला झूठा नहींः—

हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त उक़बः बिन अबू मुईत रज़ि0 बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फ़रमाया दो आदमियों के बीच सुलह कराने वाला झूठा नहीं, वह भलाई वाली बात की कानाफूंसी करता है और भली बात करता है।

(बुखारी व मुस्लिम)

शेष पृष्ठ ....35..पर

सम्पादकीय

हरमैन शरीफ़ैन

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

दो मुक़द्दस और पवित्र शहर मक्का मुअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा को ''हरमैन शरीफ़ैन'' कहा जाता है। जहाँ से पूरा इस्लामी इतिहास सम्बन्धित है, अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और पैगम्बरे इस्लाम का पूर्ण जीवन काल इन्हीं दोनों पवित्र शहरों में गुज़रा, कुरआन मजीद की एक सौ चौदह सूरतें इन्हीं दोनों पवित्र शहरों में नाज़िल हुईं, हर सूरत के शुरु में यह तफ़सील होती है कि यह सूरः मक्की है या मदनी, मानव इतिहास में ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मक्का मुअज़्ज़मा को जो महत्तवता प्राप्त है, वह दुनिया के किसी भी शहर को प्राप्त नहीं, ज़मीन पर अल्लाह की इबादत के लिए सबसे पहला घर बैतुल्लाह मक्के में बनाया गया जिसकी पुष्टि कुरआन से हो रही है। ***''सबसे पहला घर जो लोगों के इबादत के लिए निर्धारित किया गया, वही है जो मक्का में है, पावन है और सारे संसारों के लिए मार्गदर्शक है''।*** *(आले इमरान-95)*

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत आदम व हव्वा अलैहिमस्सलाम के दुनिया में आने के बाद अल्लाह तआला ने जिबरईल अमीन के ज़रिये उनको यह हुक्म भेजा कि वह बैतुल्लाह (काबा) बनाएं, उन बुजुर्गों ने हुक्म का पालन किया तो उनको हुक्म दिया गया कि उसका तवाफ़ करें और उनसे कहा गया कि आप ''अव्वलुन्नास'' यानी सबसे पहले इंसान हैं और यह घर ''अव्वलु बैत'' है यानी सबसे पहला घर जो अल्लाह की इबादत के लिए निर्धारित किया गया है। नबी करीम सल्ल0 की इस हदीस से मालूम होता है कि मक्का मुअज़्ज़मा दुनिया का सबसे पुराना और सबसे पहला शहर है जहाँ से इन्सानी आबादी शुरू हुई, इस्लामी इबादात के सबसे बड़े फ़रीज़े हज की अदाएगी मक्का और उसके आस पास के इलाक़ों में होती है यह सब ऐतिहासिक स्थान हैं, जो बहुत ही सम्मानीय और बा बरकत हैं, हज शुरु से आखिर तक हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी हज़रत हाजिरा अलैहिस्सलाम की यादगार है। ''ज़मज़म'' मस्जिद हराम के अन्दर पानी का यह एक चश्मा है जिसको अल्लाह तआला ने अपनी ख़ास इनायत से हज़रत इस्माईल की प्यास के मौक़े पर पैदा फ़रमाया था जो आज तक हज़ारों साल से जारी है और तरक़्क़ी पर है, और सारी दुनिया सैराब हो रही है। ज़मज़म स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है।

सफ़ा और मरवह बैतुल्लाह से क़रीब पूरब की ओर दो पहाड़ियाँ हैं जहाँ हज़रत हाजिरा अलैहिस्सलाम पानी की तलाश में दौड़ी थीं आज हाजी उसी की यादगार में सात चक्कर लगाते हैं। हज़रत हाजिरा का यह अमल अल्लाह को बहुत प्रिय था।

मक्के का चप्पा चप्पा इस्लामी इतिहास और मुहम्मद सल्ल0 के जीवन काल की यादगार है जहाँ नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने जन्म दिन से हिजरत की रात तक अपनी उम्र के 52 साल गुज़ारे यानी बचपन से जवानी तक, मक्के की ऐतिहासिक जगहों में जबले सौर की बड़ी अहमियत है जिसके ग़ार में नबी करीम सल्ल0 ने हिजरत के मौक़े पर तीन रातें गुज़ारीं, इसी प्रकार जबले नूर की बड़ी अहमियत है जिसमें ग़ारे हिरा है, यही वह ग़ार है जिसमें कुरआन शरीफ़ की सबसे पहली आयत नाज़िल हुई नबूवत से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस ग़ार में इबादत के लिए तशरीफ़ लाते थे और तनहाई में बड़ा वक़्त गुज़ारते थे।

मदीन–ए–मुनव्वरहः–

इस्लामी इतिहास में मक्का मुअज़्ज़मा जहाँ बैतुल्लाह है, के बाद सबसे सम्मानीय और पवित्र शहर मदीना मुनव्वरह है, इस्लाम से पहले इस शहर का नाम ''यसरिब'' था, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक्का मुकर्रमा से हिजरत करके इस शहर को अपना वतन बना लेने के बाद यह मदीनतुर्रसूल यानी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का शहर कहलाया जाने लगा और यहीं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की क़ब्र मुबारक और आपकी बनाई हुई मस्जिद है, इस शहर को भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के हुक्म से ''हरम'' क़रार दिया और इस्लाम के तीन बहुत ही मुक़द्दस शहरों में से एक क़रार पाया, पहला शहर मक्का मुकर्रमा, दूसरा मदीना मुनव्वरा और तीसरा बैतुल मुक़द्दस, मदीना मुनव्वरा में एक नेकी का सवाब एक हज़ार नेकियों के बराबर क़रार पाया है।

अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मदीना पहुँचने के बाद सबसे पहले मस्जिद बनाने के लिए ज़मीन ख़रीदी ताकि अल्लाह की इबादत की जाए, इस्लामी समाज में मस्जिद का केन्द्रीय स्थान है वह एक ध्रुव के समान है जिसके गिर्द इस्लामी ज़िन्दगी घूमती है। नबवी काल में यह मस्जिद ख़जूर के तनों और पत्तों से बनी थी, फर्श पर पथरीली कंकरयाँ होती थीं जिस पर नमाज़ी खड़े हो कर नमाज़ पढ़ते थे, एक ख़जूर का तना ख़ड़ा किया गया था जिस का सहारा लेकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुत्बा दिया करते थे, यह खजूर का तना इतिहास में उस्तूने हन्नाना के नाम से प्रसिद्ध है, बाद में उसकी जगह लकड़ी का मेम्बर बना दिया गया था, हिजरत के सातवें साल नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मस्जिद में इज़ाफ़ा किया था, उसके बाद सन् 17 हिजरी में हज़रत उमर रज़ि0 ने उसकी मरम्मत फरमाई और कुछ इज़ाफ़ा भी फरमाया, उस वक़्त मस्जिद के सुतून खजूर के तनों और छत खजूर के पत्तों की बनाई गई थी, सन् 29 हिज्री में हज़रत उस्मान रज़ि0 ने उसकी नये सिरे से तामीर करवाई और उसकी दीवारें और खम्बे पत्थर और चूने के बनवाए और छत साखू की लकड़ी की बनवाई और मस्जिद की तामीर में बहुत इज़ाफ़ा करवाया, हज़रत उस्मान रज़ि0 के बाद वलीद बिन अब्दुल मलिक के इज़ाफ़ों में

कई उम्महातुल मोमिनीन के मकानात मस्जिद नबवी में शामिल किये गये, इसके बाद ख़लीफ़ा और बादशाह अपने अपने ज़माने में इज़ाफ़े और मरम्मत करते रहे लेकिन वलीद बिन मलिक के बाद ख़ास इज़ाफ़े नहीं हुए। 1265 हिज्री में सुलतान अबदुल हमीद उस्मानी ने नई तामीर करवाई उस तामीर में मस्जिद के पाँच दरवाज़े और पाँच मीनारें बने, इस तामीर का दोबारा नवीनीकरण सन् 1372 हिजरी में शाह इब्न सऊद के हुक्म से हुआ, जिसमें मस्जिद के उत्तर ओर रक़बे में इज़ाफ़ा भी किया गया, मस्जिद नबवी के इस निर्माण और नवीनीकरण में निम्नलिखित दरवाज़ों का इज़ाफ़ा हुआ– बाबे अली, बाबुल अज़ीज़, बाब अबू बक्र और बाबे सऊद, बाबे उमर, बाबे उस्मान, इसके अलावा मस्जिद नबवी को चारों तरफ़ सड़कों से घेर दिया गया, इस समय बहुत ही बड़े रक़बे में ख़ूबसूरत और आलीशान मस्जिद है इसी मस्जिद के एक ओर गुम्बदे ख़ज़रा (सब्ज़ गुम्बद) है जिसके नीचे अल्लाह के अन्तिम नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आराम फ़रमा रहे हैं। (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से करीब, ख़लीफ़–ए–अव्वल हज़रत अबू बक्र रज़ि0 और ख़लीफ–ए–दोम हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 की क़ब्र मुबारक हैं।

मदीना मुनव्वरा के ऐतिहासिक स्थानों में मस्जिद नबवी के अलावा जन्नतुल बक़ी का क़दीम क़ब्रिस्तान जिसमें उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजतुल कुबरा रज़ि0 के अलावा तमाम अहले बैत, और बड़ी संख्या में सहाब–ए–किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) दफ़न हैं ''दफ़न होगा न कहीं ऐसा ख़ज़ाना हरगिज़'' मदीना मुनव्वरा से ढाई तीन मील की दूरी पर प्रसिद्ध पहाड़ उहद है जिसके दामन में ग़ज़व–ए–उहद का मशहूर वाक़िआ पेश आया, वहीं एक छोटा सा क़ब्रिस्तान है जिसमें नबी करीम सल्ल0 के चचा सय्यदुश्शुहदा हज़रत हमज़ा रज़ि0 और दूसरे शुहदा दफ़न हैं वहीं अल्लाह के नबी ज़ख़मी हुए और आपका दाँत शहीद हुआ, नबी सल्ल0 ने फ़रमाया उहद पहाड़ हमसे मुहब्बत करता है और हम भी उससे मुहब्बत करते हैं। हुजूर सल्ल0 वहाँ तशरीफ़ ले जाते शुहदा–ए–उहद को सलाम व दुआ से नवाज़ते थे। उहद के दामन में आज आबादी हो गई है, उसका नाम सय्यदिना हमज़ा है– मदीना मुनव्वरा के दक्षिण और पश्चिम दिशा में लगभग दो मील की दूरी पर कुबा के नाम से एक आबादी है जो बहुत हरी भरी जगह है जहाँ फलों और मेवों के बाग़ात हैं, यहीं वह मस्जिद है जो इस्लाम की सबसे पहली मस्जिद कहलाती है, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबसे पहला जुमा वहाँ क़ायम किया, कुर्आन में इस मस्जिद की बड़ी फ़ज़ीलत बयान की गई है। सूरः अल–तौबा, आयत–108, सफ़रे हिजरत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आखिरी मनज़िल कुबा थी, जहाँ से आप मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुए थे।

दिखा दे या इलाही वह मदीना कैसी बस्ती है।
जहाँ पर रात दिन मौला तेरी रहमत बरसती है।।

❖❖❖

इन्सान की तलाश

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

सात सौ वर्ष पहले तुर्की की सीमाओं में एक बड़े मशहूर शायर और हक़ीम गुज़रे हैं जिनका नाम मौलाना रूम है। आपने उनकी मसनवी सुनी होगी। उन्होंने एक रोचक घटना लिखी है। वह मैं आपको सुनाता हूँ। वह कहते हैं कि, ''कल रात की घटना है एक बूढ़ा आदमी चिराग लिये शहर में घूम रहा था और अन्धेरी रात में कुछ तलाश कर रहा था। मैंने कहा, ''हज़रत! आप क्या तलाश कर रहे हैं?'' कहने लगे, मुझे इन्सान की तलाश है। मैं चौपायों और दरिन्दों के साथ रहते रहते आजिज़ आ गया हूँ। मेरा धर्य टूट चुका है। अब मुझे एक ऐसे इन्सान की तलाश है जो खुदा का शेर और मर्दे कामिल हो''।

मैंने कहा, ''बुजुर्गवार! अब आप का अन्तिम समय है, इन्सान को आप कहां ढूँढेगे? इस विलुप्त पक्षी (अनका) का मिलना आसान नहीं। मैंने भी बहुत ढूँढा है, लेकिन नहीं पाया उन बुजुर्ग ने उत्तर दिया, ''मेरी आदत रही है कि जब किसी चीज़ को सुनता हूं कि वह नहीं मिलती तो उस को और ज़्यादा तलाश करता हूँ। तुमने मुझे उस बात पर आमादा कर दिया कि मैं उस गुमशुदा इन्सान को और ज़्यादा ढूँढूं और उसकी तलाश से कभी बाज न आऊँ।

सज्जनों! यह एक कवि का संवाद है। आपको शायद आश्चर्य हो कि क्या कोई ऐसा भी समय था कि इन्सान बिल्कुल नायाब हो गया था? मौलाना ने हमारे सामने एक सवाल खड़ा कर दिया कि क्या हर इन्सान, इन्सान नहीं है, और क्या इन्सानों की बड़ी–बड़ी आबादियों में भी इन्सान नायाब है? हम तो समझते थे कि इन्सान की एक ही क़िस्म है, इससे मालूम हुआ कि इन्सानों की दो किस्में हैं, एक वह जो देखने में इन्सान हैं लेकिन हक़ीक़त में इन्सान नहीं हैं और दुनिया में हमेशा इन्हीं लोगों की कसरत रही है, दूसरी वह जो हक़ीक़त में इन्सान हैं और वह कम हैं वह ऐसे गुम हो जाते हैं कि उनको चिराग ले कर ढूँढने की ज़रूरत पड़ती है।

मौलाना रूम को सात सौ वर्ष हो चुके। उनके बाद से दुनिया में बड़ी तरक्कियाँ हुईं। हर शहर में इन्सानों की तादाद बढ़ती रही है और आज की इन्सानी आबादी पहले से बहुत ज़्यादा हो गई है और इसकी तरक़्कियां भी बहुत विशाल हैं। आज इन्सान ने बिजली, भाप हवा और पानी पर कब्ज़ा जमा लिया है। हवाई जहाज, इंटरनेट, लैपटाप, मोबाईल, टीवी और ऐटम बम से इन्सानों की तरक्की का अन्दाज़ा किया जा सकता है। लेकिन दोस्तो! इन्सानों की तरक्की का अन्दाज़ा जनगणना के आँकड़ों और बड़े–बड़े सभ्य तथा विकसित देशों की तस्वीर से करना सही नहीं है। इन्सानियत की तरक्की इन भौतिक विकास का नाम नहीं है और मात्र नस्ले इन्सान की तरक्की को इन्सानियत की तरक्की नहीं कहा जा सकता। इन्सानियत की तरक्की का अन्दाज़ा इन्सानों के अख़लाक़ व किरदार से होता है और अख़लाक़ व किरदार का अन्दाज़ा

आपस में मिलने जुलने, रेल के डिब्बों, पार्को, होटलों, दफ़तरों और बाज़ारों में हो सकता है। उर्दू के मशहूर शायर अकबर ने बिल्कुल सही कहा है–

नक्शों को तुम न जाँचो।
लोगों से मिल के देखो।।
क्या चीज़ जी रही है।
क्या चीज़ मर रही है।।

इन्सानियत से बगावतः–

इन्सानियत का सही अन्दाज़ा परीक्षा की घड़ी में और ऐसी स्थिति में होता है जब हर प्रकार का सोर्स और अवसर प्राप्त हो कि चोरी, गुनाह और हक तल्फी की जा सके मगर इन्सान के अन्दर की आवाज़ उसका हाथ पकड़ ले। जहां इन्सानियत का गला घोटा जा रहा हो वहां इन्सानियत अपना जौहर दिखाये। इन्सानियत का अन्दाज़ा हमारे वर्तमान जीवन के साँचों तथा भौतिक विकास के पैमानों से नहीं हो सकता।

मानवता वास्तव में एक बड़ा मर्तबा है लेकिन मानवता के खिलाफ इन्सान हमेशा खुद बगावत करता रहा है। उस को इन्सानियत के स्तर पर कायम रहना हमेशा मुश्किल और दूभर मालूम हुआ है। वह कभी नीचे से कतरा कर निकल गया और कभी उसने अपने आपको इन्सानियत से बालातर कहलवाने और खुदा और देवता बनने की कोशिश की और सच्ची बात यह है कि लोगों ने खुदा और देवता बनने की कोशिश कम की, लोगों ने उन्हें खुदा और देवता बनाने की कोशिश ज़्यादा की। हम इतिहास पढ़ें तो मालूम होगा कि लोग इन्सानियत से उच्चतर किसी मर्तबे की तलाश में रहे और इन्सानों को इन्सानों का सही मकाम समझने के बजाय उस से ऊँचा होने की फिक्र करते रहे। इसके विपरीत दूसरा प्रयास यह रहा कि इन्सान को इन्सानियत से गिरा दिया जाये वह पाशविक (हैवानी) और मनमानी ज़िन्दगी का आदी बने और दुनिया में मनमानी ज़िन्दगी का रिवाज है।

इन दोनों कोशिशों के नतीजे हमेशा खराब हुए हैं। जब इन्सान को इन्सानियत से उठाक कर खुदा या देवता बना दिया गया तो दुनिया में अव्यवस्था फैली और बड़ा फसाद बर्पा हुआ दुनिया में लोगों ने जब खुदाई का दावा किया या लोगों ने उनको यह दर्जा दिया तो दुनिया में बिगाड़ ही बिगाड़ बढ़ता गया और इन्सानी ज़िन्दगी में नई गांठें पड़ीं। जब एक मामूली सी घड़ी किसी अनाड़ी के हाथ पड़ जाती है और वह उसकी मशीन में दखल देता है तो वह बिगड़ जाती है। तो यह संसार की व्यवस्था बनावटी खुदाओं से कैसे चल सकती है? इस दुनिया की इतनी समस्यायें, इतने मरहले और इसमें इतनी पेचीदगियां हैं कि अगर एक इन्सान दुनिया को चलाना चाहे तो निश्चय ही इसका नतीजा बिगाड़ होगा। मेरी मंशा यह नहीं कि इन्सान इन्सानियत के दायरे में तरक्की न करे, बल्कि यह कि इन्सान खुदाई की कोशिश न करे उस ने इन्सानियत ही में कौन सी कामयाबी हासिल कर ली है कि अब वह खुदाई की हवस करे।

धर्मों का इतिहास बताता है कि जब इस प्रकार का प्रयास किया गया तो ऐसी पेचीदगियां सामने आईं जिन का कोई इलाज न था। यह कोशिश दुनिया के कोने कोने में हमेशा थोड़े–थोड़े गैप के बाद होती रही। ऐसे लोगों ने प्रकृति से जोर आजमाई की है और प्रकृति से लड़ कर इन्सान ने हमेशा हार ही खाई है।

दूसरी तरफ़ ऐसे इन्सान गुज़रे हैं जिन्होंने अपने आपको चौपाया जाना। उनको इन्सान की हैसियत से अपनी तरक्की का कोई एहसास नहीं हुआ। अपनी इन्सानियत, अपनी रूहानियत और खुदशनासी की तरक्की देने का उनको भी खयाल तक नहीं आया। दुनिया में अधिकता इन्हीं इन्सानों की रही है।

इस युग की विशेषता यह है कि इस में यह दोनों फसाद जमा हो गये हैं। इस समय लगभग सारी दुनिया इन्हीं दो गिरोहों में बंटी हुई है। चन्द आदमी हैं जो खुदाई के दावेदार हैं और जिनको देवता बनने का शौक है। बाकी अक्सर वह इन्सान हैं जो चौपायों और दरिन्दों की सी ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। इस ज़माने का बिगाड़ हर ज़माने के बिगाड़ से बढ़ गया है और ज़िन्दगी अजाबे जान बन गई है।

इस समय जनगणना के खानों में कोई ऐसा खाना नहीं कि जो लोग अपनी इन्सानियत की क़द्र करते और उसको सही ढंग से इस्तेमाल करते हैं उसमें उन का इन्द्राज किया जाये। मगर आप स्वयं इन्साफ़ कीजिए कि आपके चारों तरफ जिन्दगी का जो तूफान उमड़ा हुआ है उसमें कितने इन्सान हैं जिनको इन्सानियत का एहसास है, जो यह समझते हैं कि मुझे सिर्फ एक मेदा और पेट ही नहीं दिया गया बल्कि अल्लाह ने इन्सान को एक रूह (आत्मा) भी दी है। दिल भी दिया है और दिमाग भी अता किया है, जिनको हम हमेशा नज़र अन्दाज़ करते और इनके सही इस्तेमाल से बचते हैं।

हम जिन्सी ख्वाहिशात तथा भौतिक आवश्यकताओं के रेले में ऐसे बहे चले जा रहे हैं, जैसे एक गाड़ी अपने कन्ट्रोल से बाहर लुढक रही हो जिस पर किसी का कोई काबू न हो। मैं और समझा कर कहूं यूं समझिये कि इन्सानियत एक साइकिल है और वह साइकिल एक ढलान पर से फिसल रही है, इसमें न कोई घंटी है न ब्रेक और न इसके हैंडिल पर किसी का हाथ है। भूगोल की पुरानी शिक्षा यह बताती थी कि ज़मीन चपटी है। भूगोल की नई खोज से यह साबित होता है कि ज़मीन गोल है, लेकिन मुझे भूगोल के शिक्षक और विद्यार्थी क्षमा करें, मैं यह देख रहा हूँ कि लोग अख़लाक़ी बलन्दी से हैवानी पस्ती की तरफ लुढ़कते चले जा रहे हैं और दिन प्रतिदिन उनकी रफतार तेज होती जा रही है। हमारी धरती अवश्य सूर्य की परिक्रमा कर रही है। मगर इस धरती पर बसने वाला इन्सान भौतिकता और पेट की परिक्रमा कर रहा है धरती की गति का तमाम दुनिया के अख़लाक़ और हालात पर असर पड़ रहा है। सौर्य परिवार में असल केन्द्र सूरज हो या ज़मीन लेकिन व्यवहारिक जीवन में इन्सानों का असली केन्द्र मेदा या पेट और हैवानी तत्व बना हुआ है और सारी इन्सानियत इसका चक्कर लगा रही है। आज दुनिया में सबसे विशाल क्षेत्र मेदे का है यूं कहने को तो वह मानव शरीर का बहुत छोटा सा अंग है लेकिन इसकी लम्बाई चौड़ाई और गहराई व समाव इतना बड़ा हो गया है कि सारी दुनिया इस में समायी चली जा रही है। यह मेदा इतनी बड़ी खन्दक है कि पहाड़ों से भी नहीं भरता। सब से बड़ा मजहब, सबसे बड़ा दर्शनशास्त्र मेदे की इबादत है। शिक्षण संस्थाओं में इसी का गुलाम बनाना सिखाया जा रहा है।

आज कामयाब इन्सान

बनने का फन सिखाया जाता है दूसरे शब्दों में दौलतमन्द बनने का। यह दौलतमन्द बनने की रेस है। दौलतमन्द बनने की हिर्स इतनी बढ़ गयी है कि इन्सान को खुद अपने तन मन का होश नहीं रहा। अध्ययन ज्ञान और ललित कलाओं का मकसद भी यही हो गया है कि इन्सान कहां से ज़्यादा से ज़्यादा रूपया हासिल कर सकता है? आज सबसे बड़ा इल्म और हुनर यह है कि लोगों की जेबों से किसी तरह रूपया निकाल कर अपनी जेब भरी जाये? इतना ही नहीं बल्कि थोड़े से थोड़े समय में ज़्यादा से ज़्यादा दौलतमन्द बनने की कोशिश सभ्यता और सोसाइटी के लिए इतनी हानिकारक नहीं, जितनी दौलतमन्द बनने की हवस है। यही हवस रिश्वत, खियानत, गीबत, चोरबाजारी, जखीरा अन्दोजा और दौलत हासिल करने के दूसरे अपराधिक स्रोतों को अपनाने पर आमादा करती है। इसलिए कि इन अपराधिक तरीकों के बिना जल्द दौलतमन्द बनना मुम्किन नहीं। इस विचार धारा के कारण सारी दुनिया में एक मुसीबत बर्पा है। दफ़्तरों में तूफान है। मण्डियों में क़यामत का मंजर है। आज इन्सान जोंक बन गये हैं और इन्सान का खून चूसना चाहते हैं। आज कोई कम बेगरज़ और बेमतलब नहीं रहा। आज कोई व्यक्ति बिना अपने फायदे और मतलब के किसी के काम नहीं आता। आज हर चीज़ अपनी मजदूरी और फीस मांगती है। कभी कभी तो यह ख्याल होने लगता है कि अगर पेड़ की छाया में दम लेंगे तो शायद पेड़ भी अपनी फीस और मजदूरी मांगने लगेंगे। सब का हाल यही हो रहा है कि दौलत और मनमानी का नशा सवार है। आज दौलत कमाना ही ज़िन्दगी का मकसद बन गया है और सारी दुनिया इसके पीछे दीवानी है। आज जिस इन्सान को खुदा का तालिब होना चाहिए था, उसकी मार्फत व मुहब्बत से अपना वीरान दिल आबाद, अपना नीरस जीवन बामकसद और पुरकैफ और सरल बनाना चाहिए था और उसके रास्ते में सब कुछ मिटा कर हक़ीक़ी ज़िन्दगी हासिल करनी चाहिए थी, अफ़सोस कि वह इन्सान हक़ीक़ी मुहब्बत और सही मार्फत से महरूम है। इसलिए ज़िन्दगी की असल लज़्ज़त से महरूम है। हक़ीक़ी इन्सानियत से महरूम है और अफसोस है कि लाखों करोड़ों इन्सानों को इस महरूमी का एहसास भी नहीं। आज जिस इन्सान को खुदा का परस्तार होना चाहिए था वह दौलत का परस्तार और नफ़्स का गुलाम बना हुआ है और उसको फितरत के खिलाफ इस गुलामी का एहसास भी नहीं।

हर जगह मनमानी का कब्ज़ा है:–

राजनीतिक विरोध और शासन व्यवस्था तो फुर्सत की बातें हैं। हम तो यह जानते हैं कि असल हुकूमत इच्छाओं की है। हुकूमत पर कब्ज़ा चाहे किसी कौम या पार्टी का हो और चाहे कोई मन्त्री या अध्यक्ष हो मगर दरअसल हर जगह मनमानी का कब्जा है। पहले ब्रिटेन के बारे में कहते थे कि उसकी सल्तनत में सूर्य नहीं डूबता लेकिन आज जिस हुकूमत और सल्तनत में सूरज नहीं डूबता वह मन की कामना और उसकी चाहत है।

समय की पुकार यह है कि मनोकामना पूरी की जाये, दिल की आग बुझाई जाये चाहे इन्सानों के खून की नहरें बहती

हों। चाहे नेशन्स उस रास्ते पर मिट जायें पामाल हो जायें, चाहे मुल्क के मुल्क वीरान व तबाह हो जायें। लेकिन इसमें आश्चर्य की बात नहीं। सैकड़ों साल से जो शिक्षा इन्सान को दी जा रही है चाहे वह स्कूलों के जरिये हो या सिनेमाओं के ज़रिये या साहितय व शायरी के ज़रिये, जो हर मुल्क और हर कौम में रायज है, इसका निचोड़ यही है कि तुम मन के राजा और नफ़्स के गुलाम हो।

दोस्तो! इस ज़माने के सारे इन्सानों की आबादियां इस लेहाज से एक तल पर हैं और इसके खिलाफ कोई आवाज़ सुनाई नहीं देती। मुल्कों के खिलाफ़ बगावत करने वाले बहुत हैं। छोटी छोटी समस्याओं के लिए भूख हड़ताल करने वाले बहुत हैं, स्थानीय समस्याओं के लिए जान की बाजी लगा देने वाले बहुत हैं। लेकिन इन्सानियत के लिए मरने वाले कितने हैं? कितने ऐसे हैं जिनको हक़ीक़ी इन्सानियत की फिक्र है? आज दुनिया में अगर किसी को इन्सानियत की गिरावट का एहसास भी है तो उसमें यह साहस नहीं है कि इन्सानियत के लिए आवाज़ उठाये। सारे संसार में एक आदमी भी ऐसा नहीं जो मानवता के लिए अपना बलिदान दे।

पैग़म्बरों की बेगरज़ी व बेनियाज़ी:–

वास्तव में पैग़म्बरों ही का साहस था कि उन्होंने सारी दुनिया को चैलेंज करके इन्सानियत के खिलाफ जो बगावत जारी थी उससे रोका। उनके सामने दुनिया की लज़्ज़तें और दौलतें लाई गई मगर उन्होंने सब को ठुकरा दिया और इन्सानियत के बचाव में अपनी जान को खतरे में डाला। अल्लाह की पसन्दीदा और चुनिन्दा बन्दों की यह जमाअत जिसको पैग़म्बरों की जमाअत कहा जाता है, दुनिया को कुछ देने के लिए आई थी, दुनिया से कुछ लेने के लिए नहीं आयी थी, उनकी कोई जाती गरज़ (स्वार्थ) न थी, उन्होंने दूसरों के जीने की खातिर अपने को मिटाया। उन्होंने दूसरों की आबादी की खातिर अपने घरों को उजाड़ा। उन्होंने दूसरों की खुशहाली के लिए अपने सम्बन्धियों को भूखा रखा। उन्होंने गैरों को नफा पहुँचाया और अपनों को लाभ से वंचित रखा। क्या दुनिया के लीडरों में ऐसी बेगरजी और निष्ठा की मिसालें मिल सकती हैं? पैगम्बरों ने अपने अपने ज़माने में अपनी अपनी क़ौमों में खलिश पैदा की और उनको महसूस कराया कि मौजूदा ज़िन्दगी खतरे की है। जो लोग इतमीनान के आदी थे और मीठी नींद सो रहे थे, और मीठी नींद सोना ही चाहते थे उन्होंने पैगम्बरों की इस दावत (बुलावा) और चेतावनी के विरुद्ध कठोर प्रदर्शन किया और बड़ी शिकायत की कि उन्होंने हमारा सुख चैन खराब कर दिया और हमारी नींद खराब की। लेकिन जो घर में आग लगी हुई देखता है वह सोने वालों की परवाह नहीं करता। और उसको किसी की नींद पर तरस नहीं आता। पैगम्बर इन्सान के हक़ीक़ी हमदर्द थे। वह दुनिया को सोते से जगाने को अपना फर्ज़ समझते थे। दुनिया के गुमराह रहनुमाओं और नफ़्स के बन्दों ने दुनिया को नशे के इन्जेकशन दिये और उसको थपक थपक कर सुलाया। मगर पैग़म्बरों ने इन्सानों को झिंझोड़ा और

गफलत से जगाया। यह छोटी छोटी जंगे और लड़ाईयां दरअसल इसीलिए हुईं कि दुनिया से गफ़लत दूर हो और दुनिया पर जो अन्धेरा छाया है वह समाप्त हो। इन्सान हक़ीक़ी इन्सानियत को समझे।

पैग़म्बरे इस्लाम सल्ल0 का व्यक्तित्वः—

हमारे सामने सबसे ज़्यादा मुमताज (विशिष्ट) और सबसे ज़्यादा स्पष्ट और रौशन सबसे ज़्यादा बुलन्द मर्तबः हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का व्यक्तित्व है। अगर हम इस सच्चाई का इज़हार न करें तो यह एक खियानत होगी, हमारा जमीर (अन्तःकरण) इस बात की इज़ाज़त नहीं देता है कि उनके उन एहसानात को न बतलायें जो उन्होंने इन्सानियत पर किया।

जब दुनिया में एक इन्सान यह नहीं कह सकता था कि अल्लाह ही इस दुनिया को अकेला चला रहा है और वही बन्दगी और इताअत का मुस्तहिक है तब आप सल्ल0 ने इस हक़ का ऐलान किया और इस आवाज़ को बुलन्द किया आज दुनिया के हर हिस्से से यह आवाज़ बुलन्द हो रही है और जब कोई आवाज़ सुनने में नहींआती तो यही आवाज़ कानों में आती है। आज यह आवाज तमाम दुनिया में फैल गई है। आप सल्ल0 की तालीम और आपने दुनिया को जो कुछ दिया वह इन्सानियत का मुश्तरकः सरमाया है जिस पर किसी क़ौम की इजारादारी क़ायम नहीं हो सकती। जिस तरह हवा, पानी और रौशनी पर किसी को इजारादारी का हक नहीं और कोई इस पर अपनी मुहर और अपनी छाप नहीं लगा सकता। इसी तरह हज़रत मुहम्मद सल्ल0 की तालीमात पर सारी दुनिया का हक है और हर व्यक्ति का इसमें हिस्सा है जो इनसे फायदा उठाना चाहे। यह दुनिया की तंगनज़री है कि वह इन हुकूक को किसी क़ौम या मुल्क की जागीर समझे। दोस्तो! मुहम्मद सल्ल0 मुहसिने इन्सानियत थे और सारी इन्सानियत आप सल्ल0 की ममनून (अनुग्रहीत) है। दुनिया में जो कुछ इन्साफ इस समय मौजूद है और जिन हकीकतों को इस समय तस्लीम किया जा रहा है वह सब आप सल्ल0 का फ़ैज (वरदान) है।

बहार अब जो दुनिया मेंआई हुई है।
यह सब पौध उन्हीं की लगाई हुई है।।

मित्रो हम इस मौजूदा जीवन व्यवस्था को चैलेंज करते हैं हम लोगों से डंके की चोट पर कहते हैं कि तुम दुनिया को आज जितना बुलन्द समझते हो वह उतनी ही पस्त है। हम साफ़ कहते हैं कि दुनिया सोपानवार आत्महत्या की तरफ जा रही है। यह रास्ता इन्सानियत की तबाही का रास्ता है। मैं मस्जिद से सीधा स्टेज पर नहीं आया बल्कि पुस्तकालयों के रास्ते से, अध्ययन के रास्ते से और मालूमात के रास्ते से आपके सामने आया हूँ। आपमें से कुछ लोग योरोप की दो एक भाषायें जानते होंगे मैं खुद योरोप को जानता हूँ। तुम अंग्रेज़ी दाँ, मैं अंग्रेज़ दां हूँ। मैं सारे योरोप से खम ठोंक कर कहता हूं कि तुम्हारी पूरी जीवन व्यवस्था गलत है और वह इन्सानियत को मौत की तरफ़ ले जा रही है। मेरा दावा है और पूरे तर्क और विश्वास के साथ कहता हूँ कि दुनिया की नजात पैग़म्बरों ही के रास्ते में है और दुनिया के लिए इस समय खुदा के यकीन, उसके खौफ़, दूसरी ज़िन्दगी पर ईमान और पैग़म्बरों की रिसालत के इकरार के सिवा कोई चारा नहीं।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

शिफाअत (सिफारिश):–

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिफाअत के सिलसिले में हदीसों से मालूम होता है कि इसकी कई एक शक्लें होंगी, सबसे पहली सूरत में बिल्कुल आम माफी की शक़्ल होगी। इसका जिक्र सहीह हदीसों में बहुत आया है।

सहीह बुखारी और सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरः (रजि०), हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०), हजरत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रजि०), हज़रत हुजैफा (रजि०) से कई तरीकों से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि ने सहाबा की एक मजलिस में बयान फरमाया कि क़यामत के भयानक मैदान में लोगों को एक सिफारिश करने वाले की तलाश होगी, लोग पहले हज़रत आदम अलैहिस्सलाम के पास पहुँचेंगे और कहेंगे कि आप हमारे बाप है, खुदा ने आपको अपने हाथों से पैदा किया, और आप में अपनी रूह फूंकी और फरिश्तों को आपके सज्दे का हुक्म दिया, खुदा के हुजूर में हमारी सिफारिश कीजिए, वो जवाब देंगे कि मेरा ये रुतबा नहीं, मैंने खुदा कि नाफ़रमानी की थी, आज खुदा का वो गजब है जो कभी न हुआ था और न होगा, नफ़्सी नफ़्सी!

लोग हज़रत नूह अलै0 के पास जाएंगे, और कहेंगे कि आप दुनिया के पहले पैगंबर हैं, खुदा ने आपको शुक्रगुज़ार बंदे का खिताब दिया है, आज खुदा के हुजूर हमारी सिफारिश कीजिये, वो कहेंगे कि हमारा ये रुतबा नहीं, आज खुदा का वो गजब है जो न कभी हुआ था न होगा, मुझको एक मुस्तजाबुद दुआ (जिसकी दुआ अल्लाह कुबूल कर लेता हो) होने का मौका मिला था, वो अपनी कौम की तबाही के लिए मांग चुका, नफ़्सी नफ़्सी!

तुम इब्राहीम अलै0 के पास जाओ! क़ौम उनके पास जाएगी, और अपनी वही दरख़्वास्त पेश करेगी कि आप सारे इंसानों में खुदा के दोस्त हुए, अपने परवरदिगार से सिफारिश कीजिये वो कहेंगे मेरा ये रुतबा नहीं आज खुदा का वो ग़ज़ब है जो न कभी हुआ था न होगा, नफ़्सी नफ़्सी! तुम मूसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ।

वो लोग मूसा अलै0 के पास जाएंगे, और कहेंगे कि ऐ मूसा अलैहिस्सलाम आप खुदा के पैगंबर हैं, खुदा ने अपने पैगाम व कलाम से आपको लोगों पर बरतरी बख़्शी है, अपने खुदा से हमारे लिए सिफारिश कीजिए, क्या आप हमारी मुसीबतों को नहीं देखते? हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम उनसे कहेंगे कि– आज खुदा का वो ग़ज़ब है जो कभी नहीं हुआ, और न होगा, मैंने एक ऐसे शख़्स को क़त्ल किया जिसके क़त्ल का मुझे हुक्म नहीं दिया गया था, नफ़्सी नफ़्सी!!

तुम लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास जाओ, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास जा कर लोग कहेंगे कि ऐ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम! आप खुदा के वो रसूल हैं जिसने गोद में बात की, और कलिमतुल्लाह (अल्लाह की बात) और रूहुल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से आई हुई आत्मा) हैं, अपने परवर्दिगार से हमारी सिफारिश कीजिए, वो भी कहेंगे ये मेरा रुतबा नहीं, आज खुदा का वो ग़ज़ब है जो न कभी हुआ और न होगा, नफ़्सी नफ़्सी! तुम मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जाओ।

लोग आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाएंगे और कहेंगे ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) आप खुदा के रसूल और खातमुल अम्बिया हैं और वो हैं जिसके अगले पिछले सब गुनाह माफ हैं, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अपने परवर्दिगार से हमारी सिफारिश कीजिये। ''आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उठ कर अर्श के पास आएँगे और इजाज़त मांगेंगे, इजाज़त होगी तो सजदे में गिर पड़ेंगे, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वो कुछ खोल दिया जाएगा जो किसी और के लिए नहीं खोला गया, अल्लाह तआला अपने हम्दो सना और तारीफों के वो अर्थ और शब्द आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दिल में डाल देंगे जो इससे पहले और किसी के दिल में नहीं डाले गए, आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) देर तक सजदे में रहेंगे, फिर आवाज़ आएगी, ''ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सर उठाओ, कहो सुना जाएगा, मांगो दिया जाएगा, सिफारिश करो कुबूल की जाएगी।'' आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) दरख़्वास्त करेंगे, इलाही! उम्मती उम्मती! खुदावन्दा! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत, ''हुक्म होगा'' जाओ! जिसके दिल में जौ के दाने के बराबर भी ईमान होगा उसको निजात है। ''आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) खुश खुश जाएंगे, और इस पर अमल कर के और फिर हम्द व सना कर के दरख़्वास्त करेंगे, फिर गैब से आवाज़ आएगी कि ऐ मुहम्मद! (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सर उठाओ, कहो सुना जएगा, माँगो दिया जाएगा, सिफारिश करो, कुबूल होगी।

(सीरतुन्नबी, जिल्द–3)

आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की सिफारिश से रास्ते खुल जायेंगे, जन्नत वाले जन्नत में और दोज़ख़ वाले दोज़ख़ में भेज दिये जायेंगे।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दूसरी सिफारिश पुलसिरात पर गुज़रते वक़्त होगी, इसका तज़किरा रिवायत में आता है, उस वक़्त सारे पैगम्बरों, नेक लोगों और ईमान वालों का शिआर (नारा) ''रब्बि सल्लिम, रब्बि सल्लिम'' होगा। (ऐ मेरे रब हिफ़ाज़त फरमा, ऐ मेरे रब हिफ़ाज़त फरमा) ये मुत्तफक अलैह (जिस को बुखारी व मुस्लिम दोनों ने बयान किया हो) रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस दुआ और सिफारिश से न जाने कितने लोगों को फायदा पहुंचेगा, फिर तीसरी सूरत सिफारिश की ये होगी कि जहन्नम में जाने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उम्मत के ईमान वालों की सिफारिश करेंगे, ये सिफारिश चरणबद्ध होगी, सब से पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सिफारिश पर सब से बड़ी तादात में लोग जहन्नम से निकाले जाएंगे, फिर इसी तरह दूसरी मर्तबा और तीसरी मर्तबा भी यहां तक कि राई के बराबर भी अगर दिल में ईमान है तो वो आप की सिफारिश से जहन्नम से निकाला जाएगा, विभिन्न सहीह हदीसों में इसकी तफ़्सील मौजूद है।

शिफाअत की एक क़िस्म वो भी है जिसमे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कुछ उन मुशरिकों व काफिरों को जहन्नम की गहराई से हलके अज़ाब में लाने की सिफारिश फरमाएंगे और वो सिफारिश कुबूल होगी।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हारिस (रजि०) से रिवायत है, वो फरमाते हैं कि मैंने हज़रत अब्बास को फरमाते हुए सुना, कि उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछाः अबू तालिब आपका बहुत समर्थन और मदद करते थे, क्या उनको इसका कुछ फायदा हासिल हुआ? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया– हाँ! मैंने उनको जहन्नम की गहराई में पाया तो मैं उनको उस गहराई से ऊपरी सतह तक ले आया।''

❖❖❖

बच्चों में फैलती अनैतिकता, ज़िम्मेदार कौन?

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

पूरे विश्व में बच्चों में हिंसा की बढ़ती घटनाएं और अपराध का बढ़ता ग्राफ देख कर बच्चों के मनोचिकित्सकों ने अपनी बेचैनी और चिन्ता का इज़हार करना शुरु कर दिया है उनका कहना है कि बच्चों में हिंसा और अनैतिकता के इस बढ़ते रुझान को रोकने की ज़िम्मेदारी जितनी स्कूल कालेज, सरकार और मनोविज्ञानिक केन्द्रों पर लागू होती हैं उससे कहीं ज़्यादा इसकी ज़िम्मेदारी बच्चों के माँ–बाप पर लागू होती है।

इन विशेषज्ञों ने माओं पर ज़ोर दिया है कि वह अपनी घरेलू ज़िम्मेदारियों को दूसरी समस्त बाहरी ज़िम्मेदारियों पर तरजीह दें क्योंकि बच्चों के हालात का जायज़ा लेने से यह बात सामने आती है कि उनमें हिंसा का यह रुझान इस एहसास के नतीज़े में पैदा हो रहा है कि उनके घर वाले उनके मामलात से दिल चस्पी नहीं लेते, और उनको अपने वालदैन से वह मुहब्बत, शफकत और प्यार नहीं मिलता जिसकी इस उम्र में उन्हें सख़्त ज़रूरत रहती है, चुनांचे उनको हर समय यह एहसास रहता है कि इस भरी दुनिया में वह तंहा हैं, अपने इस एहसास को दूर करने के लिए बाज वक़्त वह ऐसी हरकतें कर जाते हैं जो उनको अपराध की दुनिया तक पहुँचा देती हैं।

यह वास्तविक्ता उस समय सामने आई जब अमेरिकन पुलिस ने टेक्सास राज्य के एक शहर बार्टनबिल में एयरपोर्ट से करीब एक गढ़े के अन्दर तीन बच्चों की लाशें पाईं, पुलिस का अनुमान है कि इन बच्चों के क़तल के पीछे भी बच्चों ही का हाथ है, इस घटना से एक दिन पहले ही (Saint Scholostica College) का वार्षिक कार्यक्रम शराब के नशे में चूर छात्रों और पुलिस के मध्य टकराव के कारण दरहम बरहम हो गया, कार्यक्रम में शामिल छात्रों ने हर उस चीज़ को अपने गुस्से का निशाना बनाया जो उनके सामने पड़ी, उन्होंने फर्नीचर और गाड़ियों को आग लगा दी, दरवाज़ों और खिड़कियों पर पत्थर बरसाये, और देखते ही देखते एक शैक्षणिक संस्थान के वार्षिक कार्यक्रम को मैदाने जंग में जब्दील कर दिया।

बच्चों के बिगाड़ की ज़िम्मेदारी अगर एक ओर खानदान और समाज पर लागू होती है तो दूसरी ओर हुकूमत और तालीमी इदारों को भी इस से बरी नहीं क़रार दिया जा सकता, यह बात अपनी जगह दुरुस्त है कि माँ–बाप को अपने बच्चों की तालीम व तरबियत पर जितना सयम देना चाहिए वह अपनी दीगर व्यस्तताओं की बिना पर उतना सयम नहीं दे पा रहे हैं, उन्होंने अपने आराम, अपनी तफरीह, अपनी आज़ादी के अलावा कुछ नहीं सोचा वह ज़्यादा से ज़्यादा कमाने, अच्छी और ठाठ की ज़िन्दगी के अलावा उनके दिल में कुछ ख्याल न आया।

लेकिन वालदैन की इस कोताही और बच्चों की ओर से इतनी गफलत के बावजूद भी बच्चों में फैली अनैतिकता पर रोक लगाई जा सकती थी, और यह रोक लग सकती है शैक्षणिक संस्थानों के ज़रिए, शैक्षणिक संस्थान वह जगहें हैं जहाँ माँ–बाप की कोताहियों की कमी पूरी की जा सकती है, लेकिन शर्त यह है कि उस संस्थान में शिक्षा के साथ दीक्षा

और संस्कारी बनाने की ओर पूरा ध्यान हो, लेकिन अफ़सोस कि हमारे स्कूल कालेज और दीगर शैक्षणिक संस्थान योरोपीय देशों के शिक्षण संस्थानों की तरह ही शिक्षा दीक्षा को साथ साथ रखने में नाकाम हैं, शिक्षा तो आम है लेकिन दीक्षा बिल्कुल भी नहीं, आज के पाठयक्रमों में सबसे बड़ी कमी व खामी यह है कि नैतिकता और सांसारिक शिक्षा का कोई पाठ ही नहीं, उनके चेहरों पर जो बनावटी मुस्कुराहट देखने को मिलती है या किसी के मिलने पर वेलकम और खुश आमदेद के जो अलफाज निकलते हैं वह सब किसी न किसी मकसद और मसलहत से निकलते हैं जैसे ही वह मकसद पूरा होता है, सब गायब।

यूरोप में आपको राजनीतिक माहिरीन मिलेंगे, खगोल विज्ञान और अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ नज़र आयेंगे लेकिन शिक्षा दीक्षा के मैदान में कोई बड़ा और आईडियल व्यक्ति नज़र नहीं आयेगा।

लेकिन आज हमारा पूरा समाज यूरोप ही को हर मैदान में अपना आइडियल बनाने पर तुला हुआ है और वह भी हर तरह की आज़ादी का नारा लगा रहा है।

वालदैन और तरबियत के केन्द्रों के बाद बच्चों को बिगाड़ने और उनको ग़लत रास्ते पर डालने में नम्बर आता है, यूरोप में प्रचलित संविधान का, इंसानों की रहनुमाई के लिए खुदा के बनाये हुए कानून को छोड़ कर जब भी स्वयं के बनाये कवानीन पर अमल की कोशिश की जायेगी तो बिगाड़ के सिवा कुछ भी इन्सान के हिस्से में न आएगा।

आज हमारी नई नस्ल भी यूरोप के नक्शे कदम पर चलने को आतुर है वह भी अपने को मजहब की पाबंदियों से आज़ाद करना चाहती है वह चाहती है उसे न कोई रोके न टोके, वह जैसे चाहे ज़िन्दगी गुज़ारे जितनी चाहे अनैतिकता करे आप उसे बर्दाश्त करें वह हर तरह की जवाब देही से आज़ाद है।

इस सिलसिले में पूरे विश्व की रहनुमाई सिर्फ और सिर्फ इस्लाम और हुज़ूर सल्ल0 की तालीमात व हिदायात कर सकती है आप सल्ल0 ने एक उसूल बयान फरमाया कि हर एक ज़िम्मेदार है और हर एक से उसकी ज़िम्मेदारी के बारे में सवाल होगा अगर इसको अपना लिया जाए तो तरबियत व निगरानी का ऐसा ठोस निजाम स्वयं कायम हो जायेगा जिसकी दुनिया को इस समय सख़्त ज़रूरत है।

यही वह कारण हैं जिसकी वजह से बच्चों में हिंसा और अनैतिकता का रूझान बढ़ा है और बढ़ता ही जा रहा है इस का इलाज सिर्फ और सिर्फ इस्लामी तालीमात पर अमल करने की कोशिश है।

अब आइये दूसरों को छोड़ कर कुछ देर के लिए अपना जायजा लें कि क्या हमारे समाज में वालदैन अपनी ज़िम्मेदारी निभा रहे हैं? क्या हमारे तालीमी इदारे तरबियती पहलू को नज़र अंदाज़ नहीं कर रहे हैं? क्या खानदान के बड़ों को खानदान के बच्चों पर रोक टोक का कोई अख़्तियार रह गया है? क्या अभिव्यक्ति की आज़ादी का खुश करने वाला नारा हमारे दिलों में गुदगुदी नहीं पैदा कर रहा है? समाज का वह डर जो पहले था क्या अब भी वह हमारे दिलों में बाकी है क्या खुदाई क़ानून की जगह अपने बनाये गये क़ानूनों ने नहीं ले रखी है?

अफ़सोस धीरे धीरे यह सारी खराबियाँ हमारे समाज में सरायत करती जा रही हैं और अगर त्वरित कोई ठोस व मुवस्सिर कार्यवाही न की गयी तो हमारे बच्चों का भविष्य भी सुरक्षित नहीं है।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

हिन्दुओं के त्यौहारों की रीतियाँः–

अल बैरूनी ने हिन्दुओं के त्यौहारों का उल्लेख अध्याय 76 में बहुत विस्तार से लिखा है। उनके हर त्यौहार को ईद के नाम से याद किया है। इनमें से कुछ त्यौहारों की जानकारी तो संभवतः बहुत से वर्तमान युग के हिन्दुओं को भी न होगी। हमने इन त्यौहारों के नाम का उच्चारण अल बैरूनी के उच्चारण के अनुसार लिख दिया है। लेकिन उनके बहुत से नाम जैसे चैत, चष्ट, बहिन्द, रूप पंजा, अहारी, पहाई, अहबी गायवश, दरूबहर, पर्वत, गोना नहिदा, अष्टक, सागारतम माह–ए–तरबज, मानसरतक, पाहातन, औदाद और पौतीन आजकल के त्यौहारों के नाम से पूरी तहर भिन्न हैं। यह सभी शब्द ज़खाव के कथनानुसार हिन्दी मूल के हैं। जैसा कि किताबुल हिन्द में उनके तैयार किए हुए परिशिष्ट से पता चलेगा। इन नामों की भिन्नता का कारण मालूम नहीं हो सका। कुछ त्यौहारों की तिथि भी इस ज़माने से भिन्न है, हिन्दी महीने के क्रम में कुछ न कुछ थोड़ा सा अन्तर है। सावन के बाद आसन का उल्लेख किया गया है, आसन से तात्पर्य अशोन अर्थात कुवार है। आजकल भादों के बाद कुंवार आता है। इसकी जानकारी का कुछ विवरण निम्नलिखित है।

चैत का दूसरा दिन कश्मीर वालों के लिए त्यौहार का दिन है। इसका नाम आगदोस है। चैत के गयारवें दिन का नाम हण्डौली चैत है। इस दिन वासुदेव के मन्दिर पर एकत्र हो कर उसकी मूर्ति को इस तरह झूला झुलाते हैं जिस तरह उसको बचपन में झुलाया जाता था। घरों में भी झूले लगाए जाते हैं और लोग खुश–खुश झूला झूलते हैं। चैत में पूर्णिमा के दिन का नाम बहन्द है। इसमें औरतें श्रृंगार करके अपने पतियों से उपहार माँगती हैं। चैत के 22वें दिन का नाम चैत जेष्ट है, इस दिन स्नान किया जाता है और दान किए जाते हैं। बैशाख के तीसरे दिन औरतें स्नान करके श्रृंगार करती हैं और महादेव की पत्नी गौरी की मूर्ति की पूजा करती हैं, उसके सामने दीपक जलाती और सुगन्ध प्रस्तुत करती हैं। दिन भर भूखी रहती हैं, झूले से दिल बहलाती हैं, दूसरे दिन सवेरे दान करके खाती हैं। बैशाख़ के दसवें दिन ब्राह्मण मैदानों में निकल कर कुर्बानी के लिए पाँच दिन बहुत सी आग अलग–अलग सोलह जगहों पर सुलगाते हैं। चार–चार जगहों का एक एक घेरा होता है। हर घेरे में एक एक ब्राह्मण कुर्बानी का निरीक्षक होता है। वहाँ से सोलहवें दिन वापसी होती है। इस महीने में बसन्त का समारोह मनाया जाता है। इसमें ब्राह्मण को खाना खिलाया जाता है। जेठ की पहली अमावस्या में गल्ला बरकत हासिल करने के लिए पानी में डाला जाता है। जेठ के महीने में जब चाँद पूरा हो जाता है तो उसको रूप पंजा कहते हैं। उस दिन औरतें एकत्र हो कर खुशी मनाती हैं। अषाढ़

दान का महीना समझा जाता है। इसका नाम अहारी है। इस महीने में बर्तन बदल कर नये कराये जाते हैं। सावन में जब चाँद पूर होता है तो ब्राह्मणों को बुला कर खाना खिलाया जाता है। आसन अर्थात कुवार के आठवें दिन का त्यौहार वासुदेव की बहन महानौमी के नाम पर मनाया जाता है। इस दिन गन्ना चूसा जाता है और गन्ने की पहली पैदावार भगत की मूर्ति को उपहार में दिया जाता है। इस दिन दान भी किया जाता है और बकरियाँ भी भेंट चढ़ायी जाती हैं। आसन की 15वें तिथि में जब चाँद अपने अन्तिम चरण रेवती में होता है तो फाई का त्यौहार होता है। इस दिन कुश्ती लड़ने और जानवरों का तमाशा दिखाया जाता है। इस तिथि को वासुदेव के मामा कंस ने उसको कुश्ती लड़ने के लिए बुलाया था। आसन की सोलहवीं तिथि को ब्राह्मणों को दान दिए जाते हैं। इस महीने की तेईसवीं तिथि को अहवी कहा जाता है। इस दिन भी कुश्ती लड़ने का मनोरंजन होता है। भादों के महीने में जब चाँद दसवें चरण में प्रवेश करता है। तो उसको पितृपक्ष कहते हैं। इसमें पूर्वजों के नाम पर पन्द्रह दिन तक दान किए जाते हैं। भादों के तीसरे दिन को हरियाली कहा जाता है। औरतें कई दिन पहले से हर तरह का बीज टोकरों में बोती हैं और जब उनमें कोपल निकल आती है तो उनको निकाल कर उन पर गुलाब और सुगन्ध छिड़कती हैं। रात भर खेल–तमाशा करती रहती हैं। दूसरे दिन उन सबको तालाब पर ला कर स्नान कराती हैं। स्वयं भी नहाती हैं। फिर दान बाँटती हैं। भादों की छठी तारीख़ को गायबत कहा जाता है। इस दिन खाने की दावत होती है। भादों के आठवें दिन जब चाँद का आधा भाग प्रकाशित हो जाता है तो यह दिन दरुबहर कहलाता है। इस दिन स्नान करके उगा हुआ ग़ल्ला (अंकुरित अनाज) प्रयोग किया जाता है। इसी दिन औरतें गर्भ से रहने और बेटे की आशा करती हैं। भादों के 11वें दिन का नाम पर्वत है। यह बहुत महत्वपूर्ण दिन समझा जाता है। इस दिन वासुदेव की मूर्ति का पुजारी इस धागे को केसर से रंगता है जो उसको दिया जाता है। रंगते समय धागा में कुछ जगह खाली छोड़ देता है। फिर वासुदेव की मूर्ति के क़द के बराबर नाप कर अपने गले में डाल लेता है। जो उसके पैर तक लग जाता है। भादों की सोलहवीं तिथि को लड़के सँवारे जाते हैं। उनको सुगन्ध लगायी जाती है, फिर उनको जानवरों के साथ खेलने को कहा जाता है। इसके सातवें दिन मर्द भी अपने को सजाते हैं। महीने में जितना दिन शेष रह जाता है उसकी हर सायं को भी लड़के सँवारे जाते हैं। ब्राह्मणों को दान दिया जाता है और अच्छे कर्म करने का प्रयास किया जाता है। जब चाँद चौथे चरण रोहणी में होता है तो वह गौनालहीद कहलाता है। उसके तीन दिन तक वासुदेव के जन्म की खुशी में खेल तमाशे होते रहते हैं। कातिक के पहले दिन दीवाली मनायी जाती है। उस दिन तुला राशि में सूरज और चाँद एकत्र होते हैं। उस दिन लोग स्नान करके अपने आप को सँवारते हैं। पान और सुपारी उपहार में लोगों के पास भेजते हैं। दान करते हैं। दोपहर तक खेल–तमाशे में व्यस्त रहते हैं।

रात के समय इतना अधिक चिराग जलाते हैं कि हवा भी रोशन हो जाती है। उनका विचार है कि उस दिन वासुदेव की पत्नी लक्ष्मी सरोजन के बेटे राजा बल को जो सातवीं धरती में क़ैद है, स्वतन्त्र करती है और संसार में निकाल लाती है। उस दिन को बलराज अर्थात बल का शासन भी कहतें हैं। सामान्य लोगों का विचार है कि राजा बल त्रेता युग में था जो भलाई अर्थात नेकी का ज़माना था। यह दिन उस ज़माने जैसा हो जाता है। इसीलिए खुशी मनायी जाती है। कातिक में जब चाँद के पूरे होने का समय व्यतीत हो जाता है। तो दावतें होती हैं और शेष महीने के आधे अन्धकार पक्ष में औरतें सँवरी रहती हैं। माघ के तीसरे दिन गौरी की चाँदी की मूर्तियों को एक कुर्सी पर एकत्र किया जाता है। औरतें एकत्र हो कर रात भर खेलती रहती हैं और सबेरे दान करती हैं। माघ में जब चाँद पूरा हो जाता है तो उसमें औरतें एकत्र हो कर खुशी मनाती हैं। पूस के अधिकतर दिनों में पहोल पकाती हैं जो एक तरह का मीठा खाना होता है। पूस के आधे शुक्ल पक्ष के आठवें दिन का नाम आष्टक है। इस दिन खाना बासत अर्थात शर्मक या पालक से पकाया जाता है और ब्राह्णों को बुला कर उसी से उनका आतिथ्य–सत्कार किया जाता है। पूस के कृष्ण पक्ष के आठवें दिन का नाम सागारतम है। इस दिन शलजम खाया जाता है। माघ के तीसरे दिन का नाम माह–ए–तरबज है। इस दिन औरतें बड़े लोगों के घरों में गौरी की मूर्ति के पास एकत्र हो कर उसके सामने अच्छे किस्म के कपड़े, सुगन्ध और खाने रखती हैं। अलग–अलग सभाओं में पानी से भरे हुए 108 बर्तन रखे जाते हैं। जब उनका पानी ठण्डा हो जाता है तो रात के हर चौथे हिस्से में उससे चार बार नहाती हैं। फिर सवेरे दान करके लागों को खिलाती–पिलाती हैं। माघ में जब चाँद पूरा हो जाता है तो उसका नाम चामाह कहलाता है। उस रात ऊँचे स्थानों पर आग जलायी जाती है। माघ की 23वीं तिथि अमानसरतक या बहाईन कहलाती है। उस दिन माँस और बड़ी काली मास की दावतें की जाती हैं। माघ की 29वीं तिथि को जब रात थोड़ी रह जाती है तो सब लोग पानी में प्रवेश करके सात डुबकियाँ लगाते हैं। फागुन के आठवें दिन का नाम पूरारतक है। उस दिन ब्राह्मणों की दावत आटे और घी के विभिन्न खानों से की जाती है। फागुन के महीने में जब चाँद पूरा हो जाता है तो उसको अवदाद या ढोला कहते हैं। इस रात चामाह से नीची जगहों पर आग जला कर उसको गाँव के बाहर फेंक दी जाती है। इस महीने की 16वीं रात को शिवरात्रि मनायी जाती है। रात भर महादेव की पूजा होती है। इस महीने के तेईसवें दिन का नाम पोतीन है। इस दिन चावल के साथ घी शक्कर मिला कर खाया जाता है। मुल्तान के हिन्दुओं का एक विशेष त्यौहार साबपुर सरातर है। इसमें सूरज की पूजा होती है।

.....जारी.....

❖❖❖

कुर्आन अवश्य पढ़ें

कुर्आन शरीफ समझ कर तदब्बुर के साथ पढ़ना चाहिए लेकिन बे समझे पढ़ने में भी बड़ा सवाब है।

इसलिए तिलावत में कोताही न करें।

(इदारा)

मुस्लिम पर्सनल लॉ, ज़रूरत और अहमियत

इदारा

मुस्लिम पर्सनल लॉ का विषय भारतीय मुसलमानों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है उनका मिल्ली और मज़हबी व्यक्तित्व उसी से सम्बनिधत है। इन्हीं क़ानून और ज़ाब्तों की सुरक्षा के लिए मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की स्थापना हुई, यह बोर्ड हिन्दुस्तानी मुसलमानों का संयुक्त और सम्मानीय प्लेटफार्म है, जो पूरी सफलता के साथ अपना काम कर रहा है, जिसका सबसे पहला अधिवेशन बम्बई में मुल्क के नामवर आलिमे दीन मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब क़ासमी रह0 मुहतमिम दारुल उलूम देवबन्द की अध्यक्षता में 1972 ई0 में हुआ, इस बोर्ड की विशेषता यह है कि इसमें मुसलमानों के हर वर्ग की प्रतिनिधित्ता है, ज़माने के परिवर्तन के साथ इस बोर्ड की ज़रूरत और अहमियत दिन ब दिन बढ़ती जाएगी, शिक्षित और सभ्य समाज के लिए कानून का होना अति आवश्यक है यदि क़ानून नहीं होगा तो जंगल राज होगा, जंगल राज होने की सूरत में समाज और सोसाईटी में तोड़ फोड़ होगी और टकराव होगा, शांति और स्थिरता नहीं होगी इसलिए क़ानून का होना हर हाल मे ज़रूरी है। अब सवाल यह है कि इन्सान के लिए क़ानून बनाने का अधिकार किसको है? इस अवसर पर सरल और सुगम बात यह है कि दुनिया में कोई व्यक्ति किसी मशीन को बनाता है या कोई नया अविष्कार दुनिया के सामने लाता है तो वही उसके प्रयोग की विधि भी बताता है और वही उसका मार्गदर्शन भी करता है और उस मशीन का प्रयोग उसके मार्गदर्शन के अनुकूल किया जाता है, इन्सान अगरचि सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है परन्तु उसने अपने को न पैदा किया और न बनाया बल्कि उसका पैदा करने वाला केवल अल्लाह की ज़ात है। कुर्आन की सूरः वाक़िअः की आयत नं0 59 पढ़िये, अल्लाह तआला प्रश्न सूचक शैली में पूछता है, क्या तुम इन्सान को पैदा करते हो या हम पैदा करने वाले हैं? इससे यह बात स्पष्ट है कि इन्सान पर अल्लाह ही का आदेश चलेगा और उसी का बनाया हुआ कानून इन्सान के लिए अनुकूल और उचित हो सकता है, अल्लाह तआला बार बार अपनी किताब कुर्आन मजीद में बयान करता है कि हलाल व हराम का फ़ैसला करना अल्लाह ही का हक़ है ''इनिलहुक्मुइल्ललिल्लाह'' (सूरः अनआम आयत नं0 57) हुक्म केवल अल्लाह का''जो पैदा करने वाला और बनाने वाला है वही हुक्म देने वाला होगा, इस बात को सूरः आ़राफ़ आयत नं054 में और खुल कर बयान किया गया है ''अला लहुल ख़ल्क़ वल अम्र'' सुन लो उसी को पैदा करने और हुक्म देने का हक़ है। इन्सान अल्लाह की रचना है वह उसकी कमज़ोरियों और कमियों से भली भांति परिचित है, वही उसकी भावनाओं और आवश्यकताओं को जानता है, लिहाज़ा अल्लाह का बनाया हुआ क़ानून इन्सान के लिए उचित होगा। वास्तविक ज्ञानी तो अल्लाह ही है जो इन्सान की हर छोटी बड़ी बात को और ढकी छुपी बात को जानता है, क़ानून की बुन्यादी बात यह है कि वह न्यायपूर्वक हो, किसी पर जुल्म न हो और किसी का हक़ न मारा जाए, इस विशेषता का क़ानून बनाना इन्सान के लिए सम्भव नहीं, ऐसा क़ानून केवल अल्लाह ही की ओर से हो सकता है जिसकी नज़र में तमाम इन्सान एक समान है, उसकी करुणा और दया सबके लिए है। अल्लाह की अंतिम किताब कुरआन मजीद पूर्ण रूप से पथप्रदर्शक है और वह हर ज़माने के लिए है, परेशाँ हाल और रास्ता भटकी इन्सानियत के लिए नजात देहन्दा। ◆◇◆

तुर्की का इलेक्शन

इं0 जावेद इक़बाल

तुर्की में, जिस का सरकारी नाम अब तुर्किया है, इलेक्शन के नतीजे आ चुके हैं। रजब तय्यब अर्दोगान दूसरे दौर के मुकाबले में लगभग 53 प्रतिशत वोट हासिल करके राष्ट्रपति बन चुके हैं। उनकी जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी तो पहले ही बहुमत से संसद में अपना सिक्का जमा चुकी थी। मगर तय्यब अर्दोगान केवल आधा प्रतिशत की कमी के कारण विजेता घोषित नहीं हो सके थे। दुनिया के किसी भी देश में इलेक्शन जीतने का यह अनोखा नियम है। तुर्की में जीत के लिए कम से कम 50 प्रतिशत वोट हासिल करना आवश्यक है। केवल आधा प्रतिशत की कमी के कारण दोबारा इलेक्शन कराया गया, इस प्रक्रिया को वहां की भाषा में ''रन–आफ'' कहा जाता है। जैसा कि आशा थी, रन–आफ में अर्दोगान ने लगभग 53 प्रतिशत वोट हासिल करके विजय प्राप्त कर ली।

तुर्की के इस इलेक्शन पर दुनिया भर की निगाहें जमी हुई थी। एक ओर मुस्लिम दुनिया तय्यब अर्दोगान को भविष्य में भी सदर के रूप में देखना चाहती थी तो दूसरी ओर योरोपीय देश और अमेरिका उनकी दृढ़ नीतियों के कारण उन्हें पसन्द नहीं करते।

तुर्की एक माडर्न मुस्लिम देश है, यहां मुद्दतों बाद तय्यब अर्दोगान के दौर में इस्लामिक शिआर को महत्व दिया जा रहा है। धार्मिक कट्टरता का आरोप तो तुर्की पर आज भी नहीं लगाया जा सकता मगर इस्लामिक शिआर की ओर झुकाव योरोप व अमेरिका को भला कैसे पच सकता है ।

यह तो नहीं कहा जा सकता कि तय्यब अर्दोगान कोई फरिश्ता सिफत इंसान हैं मगर इस में भी कोई शक नहीं कि वह मजबूत इरादे के मालिक, जनता के प्रति हमदर्दी का जज़्बा रखने वाले और योरोप व अमेरिका से आंख मिला कर बात करने का साहस रखने वाले इंसान हैं। यूक्रेन और रूस की जंग में मध्यस्थता का प्रयास करके उन्होंने दुनिया को भुखमरी की भयानक त्रासदी से किसी हद तक बचाया अगर उनके प्रयास सफल न होते तो अफ्रीका के कई देशों में खाद्यान्न की कमी के कारण हजारों मौतें हो सकती थीं मुल्क शाम के ग्रह युद्ध के कारण 40 लाख शरणार्थियों का बोझ ख़ुशदिली से उठाया।

तय्यब अर्दोगान की एक विशेषता धार्मिक मूल्यों के प्रति उनकी जागरूकता है, जबकि उनके मुख्य प्रतिरोधी कमाल कलेचदार उगलू योरोप व अमेरिका के समर्थक तथा देश को इस्लामिक शिआर से दूर करने वाले मुस्तफा कमाल अतातुर्क पाशा के नजरियात के समर्थक हैं। यदि वह सत्ता पर काबिज हो जाते तो यकीनन देश को एक बार फिर अतीत की भांति बद–दीनी की तरफ़ ले जाने के प्रयास करते, संसद में तय्यब अर्दोगान की जस्टिस एंड डेवलपमेंट पार्टी के सदस्यों की संख्या अधिक होने के कारण देश में टकराव का माहौल बनता।

राष्ट्रपति तय्यब अर्दोगान की मजबूत कुव्वते इरादी के दर्शन तो कई बार होते रहे हैं,वर्ष 2016 में फौज के विद्रोह को सख़्ती से कुचलने में वह सफल रहे, सीमाओं पर होने वाली पड़ोसियों की साजिशों को भी उन्होंने सख़्ती से नाकाम बनाया। योरोपीय देशों की सदैव कोशिश रही है तुर्की को राजनैतिक एवं आर्थिक रूप से मजबूत न होने दें मगर तय्यब अर्दोगान की कुशल नीतियों के चलते वे इस में सफल नहीं हो पा रहे हैं।

अब तय्यब अर्दोगान के राष्ट्रपति बन जाने के बाद हम तुर्की के उज्जवल भविष्य की कामना करते हैं। तुर्की योरोप और एशिया के मध्य एक पुल की भांति है जो दोनों महाद्वीपों को जोड़ता है। यदि तुर्की में शांति और स्थिरता होगी, दूरदर्शी और जनता की हितैषी सरकार होगी तो पूरे एशिया में शांति और स्थिरता की उम्मीद की जा सकती है। ◆◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः क्या इन्सान अपने जिस्म का कोई हिस्सा इस तरह ख़ैरात कर सकता है कि वह लिख कर वसीयत कर दे कि मेरे मरने के बाद मेरे गुर्दे या आंख किसी ज़रूरत मन्द को दे दिये जाएं।

उत्तरः कोई इन्सान अपने अंगों का मालिक नहीं है, किसी ज़रूरत मन्द को देने की वसीयत करने का उसको हक़ (अधिकार) नहीं है।

प्रश्नः क्या औरत जनाज़े की नमाज़ में शरीक हो सकती है?

उत्तरः नमाजे जनाज़ा चूंकि बाहर होती है, और औरतें अपने घरों में ही नमाज़ अदा करती हैं इसलिए वह घर से बाहर निकल कर जनाज़े की नमाज़ में शरीक न होंगी।

प्रश्नः क्या शुगर का मरीज़ रमज़ान के रोज़े छोड़ कर फिद्या दे सकता है?

उत्तरः मरीज़ के लिए फिद्या नहीं है जब भी सिहत हो क़ज़ा करेगा। अगर फिद्या अदा करे तो कबूल होने की अल्लाह से उम्मीद की जा सकती है।

प्रश्नः पुरानी मस्जिद नये मैट्रियल से बनाई गई क्या उसकी पुरानी ईंटों से दीनी मदरसे की इमारत बनाई जा सकती है?

उत्तरः अगर उन ईंटों की मस्जिद में ज़रूरत नहीं है तो उनको ख़रीद कर मदरसे की इमारत में लगा सकते हैं।

प्रश्नः एक आदमी हर बात में क़सम खाता है उसका क़सम खाना कैसा है?

उत्तरः बिना ज़रूरत किसी बात में क़सम खाना बुरी बात है सच्ची बात पर भी क़सम न खाना चाहिए मगर जिसने अल्लाह की क़सम खाई और यूँ कहा अल्लाह की क़स्म ख़ुदा की क़सम तो वह क़सम हो गयी और अगर अल्लाह का नाम नहीं लिया केवल इतना कह दिया मैं क़सम खाता हूं कि मैं फलां काम न करूंगा तब भी क़सम हो गयी।

प्रश्नः अगर किसी ने कुर्आन मजीद हाथ में लेकर कोई बात कही लेकिन क़सम नहीं खाई तो क़सम होगी या नहीं?

उत्तरः कुर्आन मजीद को हाथ में लेने या छूने या मस्जिद की तरफ हाथ उठाने से क़सम नहीं होती जब तक कि क़सम का शब्द न कहे।

प्रश्नः अगर किसी ने क़अ़बः की क़सम, आँखों की क़सम, बेटों की क़सम, अपनी जवानी की क़सम, अपनी माँ की क़सम या किसी के जान की क़सम खाई तो क्या क़सम होगी?

उत्तरः अल्लाह के सिवा किसी और की क़सम खाने से क़सम नहीं होती ऊपर जितने क़िस्म की क़समें बताई गई हैं उनमें से किसी के खाने से क़सम नहीं होती, इस तरह की क़सम खा कर उसके खिलाफ़ करने से कफ़्फ़ारा न देना पड़ेगा।

प्रश्नः किसी दूसरे ने क़सम दिलाई कि तुम्हें खुदा की क़सम, तुम यह काम ज़रूर करो तो ऐसी क़सम का क्या हुक्म है?

उत्तरः किसी दूसरे की क़सम दिलाने से क़सम नहीं होती उसके खिलाफ़ करना दुरुस्त है।

प्रश्नः क़सम खा कर किसी ने इन्शा अल्लाह का शब्द कह दिया तो क्या यह क़सम हो गयी?

उत्तरः क़सम खा कर अगर किसी ने इंशाअल्लाह का शब्द कह दिया कि फलां काम इंशाअल्लाह न करूँगा तो क़सम न होगी।

प्रश्नः अगर ऐसी बात पर क़सम खाई जो अभी नहीं हुई बल्कि आइन्दा होगी जैसे खुदा

की क़सम आज मेरा भाई आयेगा फिर वह नहीं आया और पानी नहीं बरसा तो क्या कफ़्फ़ारा देना पड़ेगा?

उत्तर: ऊपर की बयान की हुई सूरत के अनुसार कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्न: किसी ने गुनाह करने की क़सम खाई थी कि फलाने की चीज़ चोरी करूंगा या खुदा की क़सम अपने माँ–बाप से कभी नहीं बोलूंगा, ऐसी क़सम का क्या हुक्म है?

उत्तर: ऐसी क़सम का तोड़ना वाजिब है और क़सम तोड़ने का कफ़्फ़ारा दे दे नहीं तो गुनाह होगा।

प्रश्न: अगर किसी ने क़सम तोड़ डाली तो उसका कफ़्फ़ारा क्या है?

उत्तर: अगर किसी ने क़सम तोड़ डाली तो उसका कफ़्फ़ारा यह है कि दस मुहताजों को दो वक़्त खाना खिला दे या कच्चा अनाज दे दे या पौने दो सेर गेहूं दे दे बल्कि दो सेर दे दे और बाक़ी तरीक़ा वही है, जो रोज़े के कफ़्फ़ारा में है या कपड़ा जिससे बदन का हिस्सा ढक जाए जैसे चादर या बड़ा लम्बा कुर्ता दे दिया तो कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा, लेकिन वह कपड़ा बहुत पुराना न होना चाहिए और अगर हर फ़क़ीर को एक लुंगी या केवल एक पायजामा दे दिया तो कफ़्फ़ारा न अदा होगा अगर लुंगी के साथ कुर्ता भी हो तो अदा हो गया, और इन दोनों में इख़्तियार है कि चाहे कपड़ा दे चाहे खाना खिलाए हर तरह कफ़्फ़ारा अदा हो जाएगा और यह हुक्म जो बयान हुआ तब है जब कि मर्द को कपड़ा दे और अगर किसी ग़रीब औरत को कपड़ा दिया तो इतना बड़ा कपड़ा होना चाहिए कि सारा बदन ढक जाए और उससे नमाज़ पढ़ सके उससे कम होगा तो कफ़्फ़ारा अदा न होगा।

प्रश्न: किसी ने कई बार क़सम खाई जैसे एक बार कहा अल्लाह की क़सम फुलाना काम न करूंगा, फिर क़सम खाई कि खुदा की क़सम फुलां काम न करूंगा फिर क़सम खाई, तो क्या अलग –अलग कफ़्फ़ारा देना होगा?

उत्तर: इन सूरतों में केवल एक ही कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्न: हड़ताल की वजह से स्कूल बन्द हो जाते हैं मैं एक प्राइवेट स्कूल में पढ़ाता हूँ स्कूल बन्द हो जाने के बाद तन्ख़्वाह पूरी मिल जाती है तो क्या यह पैसा लेना जायज़ है?

उत्तर: इसमें कोताही आपकी ओर से नहीं है इसलिए आपकी तन्ख्वाह हलाल है।

प्रश्न: हमारे दोस्त की एक गाड़ी है जो बच्चों को रोज़ ले आती ले जाती है हर महीना किराया लेते हैं अब स्कूल में दो माह की छुट्टियाँ हो रही हैं इन दो माह का किराया लेना जायज़ है या नहीं?

उत्तर: अगर स्कूल वाले खुशी से छुट्टी के ज़माने का किराया भी दें तो जायज़ है।

प्रश्न: मेरे पति नौकर पेशा हैं मेडिकल कालेज में जिनको विभाग की ओर से सुहूलतें हैं और जो दवाएं हमें मिलती हैं वह पैकिंग की हुई होती हैं कुछ तो वक्ती तौर पर यानी बीमारी के दौरान खाई जाती हैं बाक़ी बच जाती हैं उनको हम क्या करें क्या कैमिस्ट को दे दें। कैमिस्ट को दे कर कोई दूसरी चीज़ दूथ पाउडर ले सकते हैं, क्या यह शरीअ़त में जायज़ है क्योंकि मैं सौम सलात की बहुत पाबन्द हूं, मश्कूर हूंगी?

उत्तर: विभाग की ओर से जो दवाएं मिलती हैं उनका आप इस्तेमाल कर सकती हैं मगर उनके बेचने या बदलने की शरीअ़त में इजाज़त नहीं है जो बची हुई दवाएं हों उनको विभाग को वापस कर दिया कीजिए, और अगर उनकी वापसी मुम्किन न हो तो ज़रूरतमन्द मुहताजों को दे दिया करिये या किसी खैराती शिफ़ा खाने में भिजवा दिया करिये।

❖❖❖

ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को मुबारकबाद

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड भारतीय मुसलमानों का सबसे प्रतिष्ठित और प्रभावशाली एक गैर सरकारी संगठन है, जो पर्सनल लॉ के मामलों में मुसलमानों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है।

जिस का गठन 27–28 दिसम्बर 1972 में भारतीय मुसलमानों के बीच इस्लामी पर्सनल लॉ की रक्षा करने और उसे बढ़ावा देने के उद्देश्य से ऐसे हालात में किया गया था, जिसमें मुसलमानों के लिए अपने इस्लामी पर्सनल लॉ पर अमल करने के इख्तियार को चैलेंज किया जा रहा था और यह चैलेंज मुल्क के बहुसंख्यकों के बाज, हल्कों की ओर से किया जा रहा था, जो अगर कामयाब हो जाता तो मुसलमानों का अपनी इस्लामी शरीअत पर अमल करने का रास्ता इस मुल्क में बंद हो जाता।

बोर्ड मुख्य रूप से विवाह, तलाक, इद्दत, ख़ुलअ़, वरासत, हिबा आदि व्यक्तिगत मामलों से संबंधित मुद्दों पर नज़र रखता है, जो इस्लामी क़ानून द्वारा नियंत्रित होते हैं, जिन्हें शरीया के रूप में जाना जाता है। बोर्ड अपने गठन से लेकर अब तक अपने उद्देश्य में पूरी तरह कामयाब है।

ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड का दो दिवसीय 28वाँ अधिवेशन 3 व 4 जून, 2023 को मध्य प्रदेश के इंदौर से 30 कि0मी0 दूर जामिया इस्लामिया बंजारी में सकुशल संपन्न हुआ, जिसमें मौलाना खालिद सैफुल्लाह रहमानी को बोर्ड का निर्विरोध पाँचवाँ अध्यक्ष चुन लिया गया, मौलाना रहमानी अब तक बोर्ड के महासचिव के पद पर कार्यरत थे। मौलाना रहमानी भारत के एक प्रतिष्ठित न्यायविद, कई न्याय शास्त्र पुस्तकों के लेखक और इस्लामिक धर्म शास्त्री हैं वह ऑल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के संस्थापक सदस्यों में से एक हैं। मौलाना के बोर्ड का अध्यक्ष चुने जाने पर क़ौम व मिल्लत के हर निष्पक्ष व्यक्ति का यह एहसास है और हर एक को यह पूरा यक़ीन है कि बोर्ड मौलाना की अध्यक्षता में भी उसी प्रकार बिना रुके और बिना डिगे अपने मूल उद्देश्यों पर क़ायम रहते हुए सभी चैलेंज़ों का डट कर मुकाबला करेगा, और क़ौम व मिल्लत के भरोसे, विश्वास एवं एकता को उसी प्रकार बाक़ी रखने की कोशिश करेगा, जिस प्रकार बोर्ड के चारों पूर्व अध्यक्षों मौलाना कारी मु0 तय्यब कासमी, हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी, क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम कासमी और मौलाना सय्यद मु0 राबे हसनी नदवी ने रखा।

बोर्ड के अध्यक्ष का पद 13 अप्रैल 2023 को हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी के 94 वर्ष की उम्र में निधन के बाद से खाली था।

अधिवेशन के दूसरे सत्र में बोर्ड के दो उपाध्यक्षों के खाली पदों को भी भरा गया, बरेलवी मस्लक़ की नुमाइंदगी के लिए मौलाना डॉ0 सय्यद मुहम्मद खुसरू हुसैनी (गुलबर्गा) को चयनित किया गया, जिनकी दीनी तालीमी और मिल्ली ख़िदमात का दायरा बड़ा व्यापक है, जमाते इस्लामी की नुमाइंदगी

के लिए जमात के मौजूदा अमीर जनाब सय्यद सआदतुल्लाह हुसैनी को चयनित किया गया वह एक मुखर वक्ता और पेशे से इलेक्ट्रानिक और दूर संचार इंजीनियरिंग में स्नातक हैं। बोर्ड के महासचिव के खाली पद पर बोर्ड के मौजूदा सचिव मौलाना फज़लुर्रहीम मुजद्दिदी नदवी अमीर जामिया हिदायत (जयपुर राजस्थान) को बोर्ड का महासचिव चुना गया, मौलाना मुजद्दिदी भी बड़े संयमी और दीनी व दुनियावी तालीम के मैदान के एक तजरिबा कार शख्सियत हैं राजस्थान में उनकी तालीमी कोशिशों को सरकारी व गैर सरकारी दोनों सतहों पर बड़ी क़द्र की निगाह से देखा जाता है।

इसी प्रकार तीन नये सचिवों का भी चयन हुआ–

(1) नाजिम नदवतुल उलमा, लखनऊ हज़रत मौलाना सय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी जो एक इल्मी शख्सियत के मालिक हैं जो देश दुनिया की परिस्थितियों पर पैनी नज़र रखने वाले, और समाज के सुधार के लिए हमेशा चिंतित रहने वाले व्यक्ति हैं।

(2) इमारते शरीआ़ बिहार, उड़ीसा व झारखण्ड के मौजूदा अमीर जनाब सय्यद अहमद वली फैसल रहमानी जो एक प्रसिद्ध आलिमे दीन और कई दीनी व इल्मी संस्थाओं के ज़िम्मेदार हैं। (3) आल इंडिया मिल्ली कौंसिल के उपाध्यक्ष मौलाना यासीन अली उस्मानी बदायुनी जो एक सियासी व समाजी व्यक्तित्व के मालिक हैं। इसी प्रकार मशहूर मिल्ली शख्सियत डॉ0 सय्यद कासिम रसूल इलयास को प्रवक्ता और जनाब कमाल फारूक़ी साहब को उनका सहायक नियुक्त किया गया।

इदार–ए–सच्चा राही, अपनी ओर से और अपने समस्त पाठकों और शुभचिंतकों और नदवतुल उलमा के सभी असातिज़ा और कारकुनान की ओर से सभी नव निर्वाचित सम्मानित पदाधिकारियों को मुबारकबाद पेश करता है और उम्मीद करता है कि बोर्ड हमेशा क़ौम व मिल्लत की रहनुमाई पूरे निष्ठा भाव से करता रहेगा और मुल्क में उठने वाले सभी दाखली और खारजी फ़ितनों और चैलेंज़ों का डट कर मुकाबला करेगा और एकता की इस डोर को कभी टूटने और बिखरने नहीं देगा।

❖❖❖

पृष्ठ ....33....का शेष

वर्तमान काल में जब दुनिया एक गाँव का रूप लेने के द्वार पर थी संचार माध्यम विकसित हो रहे थे, दुनिया के एक कोने से लगाई जाने वाली आवाज़ दूसरे कोने तक सुने जाने में कोई रूकावट बाक़ी रहने वाली न थी, और यह सब ईश्वर की नीतियों के अनुसार चल रहा था, सब कुछ उस के ज्ञान में था। अतः उस मालिक ने धरती केन्द्र ''नाभा प्रथिवा'' (नाफे ज़मीन) मक्का नगर में अपने अंतिम ईश्दूत हज़रत मुहम्मद सल्ल0 को भेज दिया। उस ईश्वर ने अपने प्रथम दूत नूह को वृहद भारत भूमि के किसी स्थान सम्भवतः तन्नूर में भेजा था और उन की कथा को दुनिया के सभी इंसानों के लिए उनके अपने अपने ग्रंथों में सुरक्षित कर दिया है।

कुरआन में इसी ओर इशारा करते हुए अल्लाह ने कहा है कि ''हमने इस घटना को निशानी बना दिया है..... ताकि याद रखने वाला कोई कान (अर्थात ज्ञानी व्यक्ति) उसे याद रखे। (69:11–12,59:9–15, 37:75–82)।

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

ग़लत तरीका या बे जरूरत तलाक पर सजा की गुंजाइश?:–

यहां ये जिक्र कर देना भी शायद नामुनासिब न हो कि तलाक़ के ग़लत तरीक़े और बहुत ज़्यादा बेजा इस्तेमाल और समाज के बिगाड़ की हालत में आलिमों के मश्वरे से इसे एक दण्डनीय अपराध भी करार दिया जा सकता है, इसके बाद गलत तरीकों से या बे ज़रूरत दी गई तलाक़ों पर सजा भी दी जा सकेगी, क्योंकि (ऊपर गुज़र ही चुका है कि अक्सर उलमा के नज़दीक) ये गुनाह है और हर गुनाह पर शरीयत के मुताबिक सजा दिये जा सकने पर (बशर्ते कि उस गुनाह पर हद या कफ़्फ़ारा वाजिब न हुआ करता हो) सारे इमामों का इत्तिफाक है, जैसा कि इमाम शिइर्रानी (रह०) लिखते हैं:–

अनुवादः– ***"सारे इमामों का इत्तिफाक है कि हर उस गुनाह में सजा देना शरीअत में जायज है जिस में हद और कफ्फारा न हो।"***

(अल–मीजानः पृष्ठ–194, जिल्द 2)

और फैसला करने वाली अथॉरिटी के विवेक पर छोड़ दिया जाए कि वो जिस किस्म की सजा भी मुनासिब समझे दे सके, जो जबानी डाँट फटकार भी हो सकती है, और कैद भी, और कोड़े लगाना भी हो सकता है, और अर्थदण्ड भी, खुलासा ये कि व्यक्ति, हालात और जमाने की तबदीली और इस बिना पर कि किसी से जुर्म बार बार हुआ या पहली बार हुआ, इसी किस्म के हालात के फर्क से सजा भी नरम या सख्त हो सकती है।

ऐसी सजाओं की तफ्सील, एक बड़े रिसर्च स्कॉलर इब्ने हुमाम (रह०) ने फत्हुल क़दीर में और अल्लामा ऐनी (रह०) ने "बिनाया" शरह हिदाया में लिखा है, यहां फतहुल क़दीर के कुछ हिस्से पेश किये जाते हैं।

अनुवादः– "इमाम सरखसी (रह०) फरमाते हैं कि सजा के बारे में कोई चीज निर्धारित नहीं है बल्कि वो काजी (जज) के विवेक पर छोड़ दी गई है, इसलिए कि असल मकसद लोगों को बुराइयों से रोकना है और इस बारे में लोगों के मिज़ाज अलग अलग होते हैं, कुछ लोग तो सिर्फ जुबानी समझा देने से मान जाते हैं, कुछ मार पीट से, कुछ क़ैद करने से, "शाफी" नामी किताब में लिखा है कि आला दर्जे के शरीफ लोग (उलमा और सैयद वगैरह) सिर्फ ज़बानी चेतावनी से कि "हमें आपके बारे में कुछ ऐसी गतिविधियों की जानकारी मिली है कि जो हमारी नज़र में नापसंदीदा हैं, बस इतने ही से वह सीधे रास्ते पर आ जाते हैं, (इसलिए उनको बस इतनी ही सजा का मिलना काफी होगा) इमाम अबू युसूफ से बादशाह के लिए अर्थदण्ड देने का हक तस्लीम करना भी लिखा है– जिन बुराईयों पर माली सजा दी जा सकती है, उन में जमात के साथ नमाज न पढ़ना भी शामिल है।

अल्लामा इब्ने हुमाम (रह०) ने फकीह तम्र ताशी का ये कथन भी लिखा है, जिसे लिखते हुए संकोच होता है:–

अनुवादः "अल्लाह के हक को बर्बाद करने वाले को, हर शख़्स (दीनी जज़्बे से) सजा देने का हक रखता है क्योंकि

अल्लाह तआला के हुक्म लागू करने में हर एक मुस्लमान अल्लाह का नायब है, बुराई का हाथ से मिटाना (अगर ताक़त हो) शरीअत में मतलूब है जिस की ज़िम्मेदारी हर एक पर डाली गयी है, हदीस के मुताबिक जो कोई बुराई को देखे चाहिए कि उसको हाथ से रोक दे।

अर्थदण्ड देना अब कानून नहीं:–

यहां ये साफ़ बता देना ज़रूरी है कि अर्थदण्ड देना सिर्फ इमाम अबू युसूफ (रह०) का कौल है, वो भी जईफ रिवायत के जरिये, लेकिन अक्सर उलमा के नजदीक माली सजा मंसूख (स्थगित) हो गई है इसलिए अब उलमा माली सजा का फतवा नहीं देते (और देना भी नहीं चाहिए) उलमा ने माली सजा का मतलब ये बयां किया है कि माल ले कर सुरक्षित रख लिया जाए, और वो जब सही रास्ते पर आजाए वापस कर दिया जाए वरना बैतुल माल में जमा कर दिया जाए (ये सारी तफ़्सील अल्लामा इब्ने आबिदीन शामी ने रद्दुल मुहतार में जिक्र फरमाई है।

(रद्दुल मुहतार: पृष्ठ– 76, जिल्द 3)

लेकिन कुत्बुल इरशाद हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही (रह०) ने लिखा है:– माली सजा शुरू इस्लाम में थी फिर हुक्म हो गया। ''किसी का माल उसकी इज़ाज़त के बिना लेना जायज नहीं। ''(मुसनद अहमद, जिल्द 5, पृष्ठ– 113)

हदीस के अलफाज़ हैं– किसी मुसलमान के लिए अपने भाई के माल से कोई चीज बिना उसकी मर्जी के लेना जायज़ नहीं। ये उसका नासिख (स्थगित करने वाली) है, इस मसले को इमाम तहावी ने लिखा है– (फतावा रशीदिया, पृष्ठ 167, मुद्रित रहीमिया देवबंद)।

इस तफ़्सील के सामने आ जाने के बाद और तलाक देने के मौकों, और गलत इस्तेमाल की सूरत में जबानी चेतावनी, सजा और डाँट फटकार के लागू करने की गुंजाइश (अगरचे इस हुक्म से फायदा उठाने के लिए सही मानों में शरई दारुल कजा की व्यवस्था का होना जरूरी है, लेकिन आजकल बदकिस्मती से इसका अक्सर जगहों पर वजूद ही नहीं है)। मौजूद होने पर भी तलाक़ के हुक्म को मस्लेहत के खिलाफ़ बताने की जुर्रत या मर्द को इस्लाम की तरफ से ''बेजा रिआयत'' देने का इलजाम देते रहना क्या सही अक़्ल का तक़ाज़ा कहलायेगा? सच तो ये है कि दुश्मनी के जज़्बे से बुलंद हो कर, जो भी गौर करेगा, उसे इस हुक्म में सरा सर खैर ही नज़र आयेगा, खास तौर पर इस पहलू के सामने आ जाने के बाद कि तलाक़ देने के बाद भी शरई क़ानून के अनुसार तलाकशुदा औरत के सारे खर्चों की ज़िम्मेदारी, इद्दत के जमाने में (यानी उस मुद्दत तक जब तक कि ये औरत किसी दूसरे व्यक्ति से शरअन निकाह के लायक नहीं हो जाती) तलाक़ देने वाले शौहर पर ही है, और ये हुक्म तकरीबन सारी सूरतों में जारी होता है। ''इद्दत'' की मस्लेहत असल में ये है कि अगर औरत गर्भवती है तो ये इस मुद्दत में अच्छी तरह सामने आ जाएगा (ताकि फौरन दूसरे व्यक्ति से निकाह कर के बच्चे के नसब में कोई शक–संदेह पैदा न हो) इसीलिए जवान औरत (यानी जिसे मासिक धर्म आता हो) के लिए ये मुद्दत तीन मासिक धर्म रखी गई है, क्योंकि आमतौर पर गर्भावस्था में मासिक धर्म नहीं आया करता, खुदा की शान देखिये कि यही खून पेट में बच्चे की खुराक़ बन जाता है एक आध बार मामूली सा खून आ कर रह जाता है, तीन मासिक

शेष पृष्ठ ....35..पर

दीन धर्म की बुनियादें

इं0 जावेद इक़बाल

दुनिया में यूँ तो बेशुमार (असंख्य) जानदार हैं। मगर जो मुक़ाम एवं प्रतिष्ठा इन्सान को प्राप्त है वह किसी अन्य को नहीं, इन्सान को जो अक़्ल/बुद्धि और क्षमता मिली है वह लासानी (अद्धितीय) है, अक़्ल ही के कारण इन्सान धरती की जानदार और बेजान प्रत्येक चीज़ पर अपना वर्चस्व स्थापित कर सका है। सृष्टियों के रचयिता, मालिक और पालनहार ने इन्सान को धरती पर अपना उत्तराधिकारी बनाया है उसे धरती की प्रत्येक वस्तु पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की क्षमता दी है और अन्य सभी सृष्टियों को इन्सान की सेवा पर लगा दिया है यही कारण है कि इन्सान के अतिरिक्त सृष्टि की प्रत्येक रचना उसी कार्य पर लगी हुई है जिस पर प्रभु ने उसे तैनात किया है। सूर्य अपने नियत कार्य पर लगा है, चाँद अपनी परिक्रमा पर, स्वयं हमारी धरती अपने निश्चित मार्ग पर लाखों वर्षों से घूम रही है। यदि हम गम्भीरता पूर्वक ध्यान देने का कष्ट गवारा करें तो देखेंगे कि पशु पक्षी और कीड़े मकोड़े उसी प्रकार जीवन गुज़ार रहे हैं और वही खा पी रहे हैं जो वे अपनी उत्पत्ति के प्रथम दिन खा पी रहे थे। सारांश यह है कि प्रत्येक सृष्टि की दिनचर्या सृष्टा के द्वारा निर्धारित एक निश्चित परिधि में सीमित है। मगर इन्सान वह प्राणी है जिसे प्रभु ने प्रत्येक क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान की है। न उसके खान पान पर अल्लाह ने अपना कोई नियंत्रण रखा है, न पहनावे पर, न बोल चाल पर, हर तरह की आज़ादी इन्सान को हासिल है। इन्सान चाहे तो शाकाहारी बन कर रहे और चाहे तो मांसाहारी बन कर सब कुछ खाए पिये, लिबास पर भी कोई पाबन्दी नहीं, जो चाहे पहने और जब चाहे पहने। अन्य किसी प्राणी को तो लिबास की ज़रूरत ही नहीं। इन्सान चाहे तो वस्त्र मुक्त रह सकता है मगर यह सभ्यता के विरुद्ध कहा जायेगा। सभ्यता भी इन्सान ही के लिए है वरन् पशु पक्षियों को सभ्यता से क्या लेना देना। यही हाल बोल चाल के क्षेत्र में भी नज़र आता है। संसार में असंख्य बोलियां हैं, भाषायें हैं, लेखन शैलियां हैं। चाहे तो इन्सान मीठी बोली का प्रयोग करके समाज के कानों में रस घोले और चाहे तो कड़वे भद्दे अपशब्दों से घृणा और नफ़रत के तीर छोड़े और इन्सानियत को, समाज को घायल करने का अभद्र कार्य करे।

उपरोक्त पंक्तियों में बयान की गई हक़ीक़तों से स्पष्ट हो रहा है कि इन्सान ही एक मात्र प्राणी है। जिसे अन्य सभी सृष्टियों एवं प्राणियों पर श्रेष्ठता प्राप्त है। इन्सान को प्राप्त यह श्रेष्ठता ही है जिसने उसे धरती पर सृष्टा का उत्तराधिकारी बनाया है।

''सृष्टा का उत्तराधिकारी'' और सृष्टियों में श्रेष्ठ (अशरफुल मख़लूक़ात) इतनी बड़ी पदवी? तो फिर उसी के अनुसार उसकी ज़िम्मेदारी भी बड़ी और जवाबदेही भी ज़रूरी ठहरी।

फिर तो निश्चित ही उसका मार्गदर्शन भी ज़रूरी ठहरेगा। अल्लाह अपने अन्य सभी गुणों एवं शक्तियों के साथ बहुत अधिक न्याय प्रिय और न्यायकर्ता भी है। न्याय का तकाज़ा है कि पहले मार्गदर्शन और प्रशिक्षण दिया जाए फिर उसके कर्मों के प्रति जवाब

(स्पष्टीकरण) मांगा जाए। अतः ज़रूरी है कि इस दुनिया में इन्सान का मार्गदर्शन करने के लिए वह मालिक अपने दूत, नबी या रसूल भेजे। ईशदूत भी इन्सान ही हों, आम लोगों की तरह ज़िन्दगी गुज़ारने वाले हों अन्यथा हम आपत्ति कर सकते हैं कि हे मालिक् तेरे भेजे हुए दूत तो विशेष शक्तियों वाले थे, हम उनका अनुसरण कैसे कर सकते थे। अतः आदिकाल से ही धरती के प्रत्येक क्षेत्र में उसने अपने दूत उसी समाज में से चुने जिस समाज में उन्हें भेजा तथा इन्सान का मार्गदर्शन करने के लिए उनके माध्यम से अपने निर्देश पाण्डुलिपियों, किताबों और ग्रंथों की सूरत में उतारे।

अब विचार करने योग्य बात यह है कि जब सृष्टा/पालनहार/परमेश्वर/अल्लाह एक ही है तो उसके द्वारा इन्सानों को दिए गए निर्देश भी सिद्धान्ततः समान ही होंगे। यह अलग बात है कि बदलते हुए ज़माने के अनुसार या क्षेत्रीय परिस्थितयों के कारण नियमावली में कुछ अंतर होता रहा। शरीअत में अन्तर का एक मक़सद यह था।

क्योंकि अंतिम ईशग्रंथ कुरआन में अल्लाह ने सावधान करते हुए कई बार कहा है कि मूल धर्म तो वास्तव में एक ही है मगर लोगों ने उसके टुकड़े कर दिए हैं, वे विभिन्न समूहों में बंट गये हैं और प्रत्येक समूह अपने भाग पर संतुष्ट है तथा समझ रहा है कि यही पूर्ण है।

(23:52–53, 30:32)

अल्लाह ने विभिन्न इन्सानी समूहों में एकता और सौहार्द स्थापित करने के लिए एक मूल मंत्र दिया है वह यह कि ''उन से कहो ऐ ईशग्रंथ धारको एक ऐसी बात की ओर आओ जो हममें तुम में समान है, कि हम एक ईश्वर के सिवा अन्य किसी की भक्ति न करें, न उस ईश्वर के साथ किसी को साझी ठहरायें और न ही अल्लाह को छोड़ कर आपस में किसी को पालनहार समझें यदि वे यह बात न मानें तो कहो (कोई बात नहीं) हम तो अल्लाह के प्रति समर्पित आज्ञाकारी हैं''। (3:64)

धर्म को आधार बना कर हर इलाक़े और हर ज़माने में बहुत मतभेद रहे हैं और धरती पर रक्तपात हुआ है जब कि धर्म तो आदि काल से एक ही है। एक ईश्वर की विशुद्ध भक्ति धर्म का मूल आधार है। जिसे आदि काल के (सम्भवत) प्रथम धर्म विधान 'वेद' में इस तरह कहा गया थाः

''एकं ब्रह्म द्वितीय नास्ति, नेह ना नास्ति किञ्चन''–

अर्थात ब्रह्म तो एक ही है दूसरा कोई नहीं, नहीं नहीं अंश बराबर भी दूसरा नहीं है। और यह भी सावधान कर दिया गया है कि वह ईश्वर सर्वशक्तिमान है।

तमिदं निगतं सहःस एष एक एकवृदेक एवं। (अथर्व0 20)

अर्थातः वह सर्वशक्तिमान है, वह एक है, एक वृत और एक है।

इसी बात को वर्तमान काल के अंतिम एवं आधुनिक धर्म विधान (कुरआन) में यूं कहा गया हैः ला इलाह–इल्लल्लाह

अर्थातः नहीं है कोई अन्य पूज्य सिवा अल्लाह के विदित हो कि ईशवाणी जहां उतरती है वहीं की भाषा में उतरती है ताकि लोगों को समझना सरल हो। बदलते समय के साथ विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न ईशदूत आते रहे और अपने अपने समय में इंसानों की बदलती एंव विकसित होती हुई क्षमताओं के अनुसार उन्हें धार्मिक उपासनाओं का विधान देते रहे। मगर नैतिक शिक्षाऐं सदैव समान रहीं। अंतर केवल उपासना पद्धति में होता रहा।

शेष पृष्ठ ....29..पर

माँ का मर्तबा

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत अहमश को रूपयों से भरी थैली मिली पूछा, किसने दिया, कहा, सुलैमान बिन अली ने। हज़रत सुलैमान जब भी अपने दोस्त से मिलने आते उसे बिजी पाते। सुलैमान पूछते कि क्या व्यस्तता है? कहते कि तुम जानते हो कि मेरी माँ बूढ़ी हो गई हैं उनकी सेवा कर रहा हूँ।

किताबों में है कि मशहूर सहाबी हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 की माँ बूढ़ी हो गई थीं। हज़रत अबू हुरैरह पाँच वक़्त की नमाज़ मस्जिद में अदा करने के अलावा वह अपनी माँ की खिदमत भी करते। हज के ज़माने में हज के लिए मदीना से ढेरों लोग मक्का जाते, जब हज के काफिले मक्का की ओर रवाना होते तो उन्हें छोड़ने मदीना की सरहद तक जाते और बड़ी हसरत से उन्हें विदा करते और वहाँ से लौट कर अपनी माँ की सेवा में लग जाते।

हज के ज़माने में ही दोस्त –यार मिलने आते तो उन्हें बहुत दुखी पाते। पूछते कि क्या बात है, इतना गुमसुम क्यों हो? कहते कि लोग हज को जा रहे हैं मगर मैं अभी नहीं जा सकता। दोस्त पूछते, क्या पैसे वैसे की दिक्कत है? कहते नहीं भाई! ऐसी कोई बात नहीं है, दरअसल मैं एक बहुत अहम ज़िम्मेदारी निभाने में बिजी हूँ। लोग पूछते कि वह क्या है? कहते कि मेरी एक बूढ़ी माँ है, उन्हीं की सेवा में दिन रात लगा रहता हूँ, इसलिए मैं इतनी अहम ज़िम्मेदारी को छोड़ कर नफ़्ल हज पर नहीं जा सकता।

ख़ैर! बात हज़रत अहमश की हो रही थी कि उनके पास जब रूपयों से भरी थैली आई तो उन्होंने अपने दोस्त सुलैमान से पूछा कि इसका क्या करूँ? कहा कि इस रक़म से तुम एक नौकर रख लो जो तुम्हारी माँ की सेवा कर दिया करे। अहमश ने कहा, वाह भाई वाह! जब से मैं वजूद में आया तो मेरी माँ ने खुद ही मुझे पाल पोस कर बड़ा किया, आज उसे मेरी ज़रूरत है तो मैं उसकी ख़िदमत नौकर द्वारा कराऊँगा? नहीं ये नहीं हो सकता।

माँ–बाप की सेवा के बारे में पवित्र कुर्आन में है और हमने इन्सान को वसीयत की उसके माँ–बाप के बारे में, माँ ने उसके बोझ को कमज़ोरी पर कमज़ोरी बर्दाश्त करते हुए उठाया और दोबारा में उसका दूध छुड़ाया, इसलिए कि मेरा शुक्र करो और अपने माँ–बाप के शुक्रगुज़ार रहो। (सूरः लुकमान–14)

इस्लाम में माँ–बाप की सेवा और सम्मान पर बहुत कुछ बताया और लिखा गया है और उसकी पराकाष्ठा ये है कि उन दोनों के आदेश की अवहेलना तो दूर ''उफ्फ'' तक न करना है। मुझे तो धरती पर वृद्धाश्रम की मौजूदगी ही बड़ी हैरत में डालती है। जिस संतान को माँ–बाप अपने खून–पसीने से सींचते हैं, वही उनके बूढे होने पर घर से बाहर निकाल देती है, शायद ये कृत्य दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य भी है।

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का माता पिता के सम्बन्धित कथन है कि वह व्यक्ति बर्बाद हो जाए जिसने अपने माँ–बाप को बुढ़ापे में पाया और जन्नत में न गया (अर्थात माता–पिता की सेवा करके जन्नत का पात्र न बना)।

बेहद ज़रूरी है कि माता–पिता अपने बच्चों की ऐसी परवरिश करें कि उनके मन में अपने बड़ों के लिए आदर और सहानुभूति हो ताकि जब वह बूढ़े हो जाएं तो वह आदर और सहानुभूति को प्राप्त करने वाले बन जाएं। ◆◆

पृष्ठ ....31....का शेष

आ जाएं तो इसका यकीन हो जाता है कि औरत को गर्भ नहीं है, गर्भ होने की सूरत में इद्दत बच्चे की पैदाइश है, तीन मासिक आने में आम तौर पर तीन माह लगते हैं इसलिए जिस औरत को कम उमरी या बुढ़ापे की वजह से मासिक धर्म नहीं आता उसके लिए तीन महीने की इद्दत निर्धारित है। ख़ुदा की शान (और इस दीन के प्राकृतिक होने की दलील इससे बढ़ कर और क्या होगी) कि इस्लाम से दुश्मनी रखने वाले गैर मुस्लिम (हिन्दू) भी ये कह उठे कि शौहर से तलाक़ या संबंध खत्म होने के बाद एक साल तक दूसरा निकाह न करने की पाबंदी (जैसा कि हिन्दू शादी एक्ट में थी) बहुत सख़्त और लम्बी मुद्दत है, इसे कम करना चाहिए और बस ''तीन महीने की मुद्दत'' रखनी चाहिए (कुछ समय पहले एक हिन्दू मंत्री का बयान समाचार पत्रों में आ चुका है) लेहाजा इस एक्ट (1954–55) में संशोधन कर के एक साल की अवधि घटा कर अब (12 मई 1976 को राज्य सभा ने) छः माह कर दी, जो सारे हिंदुओं, सिखों, बुद्धों और जैनियों पर लागू होगा।

(कौमी आवाज़, 13 मई 1976)

इन सारी बातों के सामने आ जाने के बाद, अगर हक का रास्ता पूरी तरह बंद न हो गया हो, और बूद्धी पर मोहर न लग गई हो, तो इस्लाम के प्राकृतिक और खुदाई धर्म होने का इंकार, बल्कि इस पर शुब्हा भी कर सकने की गुंजाइश किसी के लिए कहाँ रह जाती है।

.....ज़ारी.....

❖❖❖

पृष्ठ .....07... का शेष

दो बड़े समूह के बीच हज़रत हसन रज़ि0 के बारे में आप सल्ल0 की सुलह की भविष्यवाणीः–

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को मिम्बर पर देखा और पास में हज़रत हसन रज़ि0 थे, आप कभी लोगों की तरफ़ देखते और कभी हज़रत हसन की तरफ़, फिर आप सल्ल0 ने फरमाया मेरा यह बेटा सरदार है, शायद अल्लाह तआला इनके द्वारा दो बड़े दलों के बीच सुलह करा दे। (बुखारी)

आपस में बिगाड़ दीन को बर्बाद कर देता हैः–

हज़रत अबू दर्दा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया क्या मैं तुमको रोजा नमाज़ और सद्क़े से बेहतर काम न बता दूँ, सभी ने कहा हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल! ज़रूर बता दें। आप सल्ल0 ने फरमाया आपस में सुलह कराना, इसलिए कि आपस का बिगाड़ दीन को बर्बाद कर देने वला है।

(अबू दाऊद)

चुग़लखोर के लिए चेतावनीः–

हज़रत हुज़ैफः रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया चुगलखोर जन्नत में नहीं जाएगा, और एक रिवायत में है कि चुपके से लोगों की बात सुन कर चुगली करने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

पेशाब की छींटों से न बचने और चुग़लखोरी करने पर अज़ाबः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 दो कब्रों के पास से गुज़रे जिनको अज़ाब हो रहा था, आप सल्ल0 ने फरमाया इन दोनों को अज़ाब हो रहा है और किसी बड़ी बात की वजह से अज़ाब नहीं हो रहा है, लेकिन वह है हक़ीक़त में बड़ी बात, इनमें से एक तो चुगली किया करता था, और दूसरा पेशाब की छींटों से नहीं बचता था।

(बुखारी व मुस्लिम)

❖❖❖

मुल्क की ताक़त का सही स्रोत

हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0

मुल्क की ताकत का सही स्रोत और जीने और फलने फूलने के लिए उस का सबसे बड़ा सहारा ऐसे सत्यवादी और बेलाग इन्सानों का वजूद है जो बड़े से बड़े नाजुक और जज़्बाती मौके पर जुल्म को जुल्म, नाइंसाफ़ी को नाइन्साफ़ी और ग़लती को ग़लती कह सकते हैं। अगर आप वास्तव में किसी नेशन की बेदारी और उसके जीवन की क्षमताओं को जांचना चाहते हैं और यह अन्दाज़ा करना चाहते हैं कि वह नेशन इन्सानियत और अख़लाक़ और ज्ञान–विज्ञान की अमानत की हिफ़ाज़त की कहां तक योग्यता रखता है, तो यह देखिये कि इस में कितने लोग ऐसे पाये जाते हैं, जो आलोचना के मौक़े पर अपने–पराये की तमीज़ न करते हों, जो सरीह ग़लती के मौक़े पर बड़ी से बड़ी अक्सरीयत और बड़ी से बड़ी ताकतवर हुकूमत को बरमला टोक देते हों जो मजलूमों और कमज़ोरों के लिए सीना सिपर बन जाते हों और बिगड़े हुए हालात में ऐश के ऐवानों को छोड़ कर दीवानों की तरह फिरने लगते हों, और किसी मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करते हों, जिन को आगे के फायदे और समय की मसलहत सच्ची बात कहने से बाज़ न रखते हों, जो हक की हिमायत और ऐलान में अपनी क़ौम का कोप भाजन बनने को अपनी क़ौम का महबूब बनने पर हज़ार बार तरजीह (प्राथमिकता) देते हों। जब सारे मुल्क में ज़्यादती, हकतल्फ़ी, जानिबदारी और मसलहतपरस्ती की हवा चल रही हो तो वह अपना खाना पीना भूल जायें और हालात को दुरुस्त करने के लिए कोई कसर न रखें, जो वक्त के मसअले के सामने इख्तेलाफात को भुला दें, बिला तमीज क़ौम व मिल्लत, बिना किसी भेद–भाव के इन्सानी जान व आबरू की हिफ़ाज़त के लिए जान की बाजी लगा दें।

अगर ऐसे लोग उस नेशन की तादाद के मुनासिब और आवश्यकतानुसार पाये जाते हैं तो उस नेशन और उसके भविष्य की तरफ से निराश होने की ज़रूरत नहीं, उस की हर परेशानी दूर हो जायेगी, पत्थर मोम और दुश्मन दोस्त बन जायेंगे।''

–पिछले अंक से आगे

उर्दू के आधार-स्तंभ

डॉ0 मुहम्मद अहमद

11. 'आतिश' (1778–1849):– ख़्वाजा हैदर अली 'आतिश' ख़्वाजा अली बख़्स के पुत्र थे। उनका जन्म 1778 में फ़ैज़ाबाद में हुआ था। आतिश के लड़कपन में ही पिता की मृत्यु के कारण उनकी शिक्षा की उपेक्षा हुई। उन्होंने नवाब मिर्ज़ा मुहम्मद तक़ी ख़ाँ की नौकरी कर ली। 1805 ई0 के लगभग, जब नवाब स्थायी रूप से लखनऊ आ गये तो वे अपने साथ, आतिश को भी ले आये। लखनऊ आने पर उन्होंने 'इंशा' और 'मुसहफ़ी' के ज़ोरदार मारके देखे जिनमें उन्हें बड़ा आनन्द आता था। यहीं से उनमें शायरी के प्रति रुचि जागृत हुई और वे शीघ्र ही 'मुसहफ़ी' के शागिर्द बन गये।

आतिश सभी प्रकार के दरबारी प्रभाव से मुक्त थे क्योंकि उन्होंने कभी किसी संरक्षण या कृपा की आकांक्षा नहीं की, उन्होंने फ़क़ीरों के समान जीवन व्यतीत करना अधिक पसन्द किया। आतिश की मृत्यु 71 वर्ष की उम्र में 1849 ई0 में हुई।

उर्दू ग़ज़ल लेखकों में मीर तथा ग़ालिब के पश्चात 'आतिश' का ही स्थान आता है। उनकी ग़ज़लों के दो दीवान हैं, जिनमें से प्रथम को तो उन्होंने स्वयं ही तथा द्वितीय को उनकी मृत्यु के पश्चात उनके प्रिय शागिर्द ख़लील ने संगृहीत किया।

12. 'सुरूर' (1787–1867):– मिर्ज़ा रजब अली बेग 'सुरूर', मिर्ज़ा असग़र अली बेग के पुत्र थे, तथा 1787 ई0 में लखनऊ में पैदा हुए थे। वे एक प्रतिष्ठित परिवार के थे। उनकी शिक्षा–दीक्षा लखनऊ के साहित्यिक वातावरण में हुई थी। उन्होंने फ़ारसी और अरबी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था। वे एक उच्चकोटि के सुलेखक (कातिब) थे। शायरी में वे आग़ा नवाज़िश हुसैन के शागिर्द थे।

सुरूर का व्यक्तित्व आकर्षक था। वे हंसमुख प्रकृति के एक अच्छे आदमी थे। कहा जाता है कि नवाब ग़ाज़ीउद्दीन हैदर की निर्वासन आज्ञा के फ़लस्वरूप उन्हें कानपुर आ कर रहना पड़ा, जहाँ उन्होंने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'फ़सान–ए–अजायब' की रचना की। 1846 ई0 में पचास रूपये मासिक वेतन पर नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी कवि हो गये। इसके अगले वर्ष उन्होंने वाजिद अली के आदेश से 'शमशेर ख़ानी' का अनुवाद 'सुरूर–ए–सुलतानी' के नाम से किया। 'शरर–ए–इश्क़' उन अनेक छोटी कहानियों में से एक है जिनकी रचना उन्होंने 1847 तथा 1851 के मध्य की। 1856 में उन्होंने 'शगूफ़ा–ए–मुहब्बत की रचना की।

13. 'ज़ौक़' (1789–1854):– शैख़ इब्राहीम 'ज़ौक़' दिल्ली के एक निर्धन सिपाही शैख़ मुहम्मद रमज़ान के बेटे थे। उनका जन्म 1789 में हुआ था। बचपन में उन्होंने हाफ़िज़ गुलाम रसूल से शिक्षा प्राप्त की थी। 'ज़ौक़' की शीघ्र ही शायरी में रुचि उत्पन्न हो गयी तथा वे अपने शेअर संशोधनार्थ अपने उस्ताद के सामने पेश करने लगे। वे बाद में शाह 'नसीर' से परामर्श लेने लगे। उनके अनेक विख्यात शागिर्द थे जिनमें सर्वाधिक महत्व के एवं उनकी प्रतिष्ठा वृद्धि करने वाले बहादुरशाह 'ज़फ़र' थे।

ज़ौक़ के भूतपूर्व उस्ताद 'नसीर' ने दक्षिण से लौट कर जब उन्हें उनके सम्मानित स्थान से अपदस्थ करने का प्रयत्न किया, तो उन्होंने अपनी काव्य प्रतिभा और विद्वता से सिद्ध कर दिया कि ऐसा करना सरल कार्य नहीं था। ज़ौक़ ने अकबर शाह द्वितीय से 'ख़ाक़ानी–ए–हिन्द' की उपाधि अर्जित की। उन्होंने बहादुरशाह ज़फ़र से जागीर तथा अन्य भेंटों के अतिरिक्त 'ख़ान बहादुर' की उपाधि प्राप्त की। ज़ौक़ की मृत्यु 1854 ई0 में हुई।

14. 'ग़ालिब' (1797–1869):–

मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ाँ (उर्फ़ मिर्ज़ा नौशा) जो पहले 'असद' और फिर 'ग़ालिब' तख़ल्लुस रखते थे,1797 में आगरा में पैदा हुए। पालन–पोषण उनके ननिहाल आगरा में हुआ। आरम्भ में उन्होंने मौलवी मुहम्मद मुअज़्ज़म से शिक्षा प्राप्त की। परन्तु ग़ालिब के फ़ारसी के गंभीर ज्ञान का श्रेय मौलाना अब्दुस्समद हुरमुज़्द को है, जो दो वर्ष तक उनके विशेष शिक्षक थे। ग़ालिब ने उर्दू शायरी की रचना 8 या 9 वर्ष की अवस्था से ही शुरु कर दी थी, फ़ारसी शायरी की रचना के समय वे कठिनता से 10 या 11 वर्ष के रहे होंगे।

ग़ालिब अपनी प्रारंभिक अवस्था में शतरंज खेलने और पतंग उड़ाने के शौक़ीन थे। ये शौक़ उनकी साहित्यिक गतिविधियों में बाधक नहीं बने। 13 वर्ष की आयु में उनका विवाह दिल्ली के एक प्रतिष्ठित और ख्यातिप्राप्त घराने में हुआ। इस संबंध में उन्हें समाज की उच्च श्रेणी तथा साहित्यिक क्षेत्र में प्रवेश का अवसर मिला।

ग़ालिब के पत्रों के द्वारा उर्दू गद्य शैली को एक नवीन दिशा–निर्देश मिला है, किन्तु कवि रूप में उनकी प्रसिद्धि के कारण यह तथ्य उजागर नहीं हो सका। उर्दू गद्य के विकास में ग़ालिब की देन महान है। इस प्रकार वे एक प्रसिद्ध शायर ही नहीं थे अपितु अग्रगण्य गद्य लेखक भी थे।

उनकी रचनाएं हैं–

(1) 'ऊदे हिन्दी' (2) 'उर्दू–ए–मुअल्ला', (3) फ़ारसी पद्य तथा गद्य का कुल्लियात, (4) 'दीवान–ए–उर्दू, (5) 'लतायफ़ –ए–ग़ैबी', (6) 'तेग़–ए–तेज़', (7) 'क़ता बुरहान', (8) 'पंज आहंग', (9) 'नामाए–ग़ालिब', (10) 'मेहर–ए–नीमरोज़', (11) 'दस्तंबो', (12) 'सब्द चीन'।

15. 'मोमिन' (1800–1853):–

दिल्ली के मोमिन ख़ाँ 'मोमिन' हकीमों के प्रसिद्ध घरानों से संबंधित थे। वे हकीम गुलाम नबी ख़ाँ के पुत्र थे। मोमिन के पितामह हकीम नामदार ख़ाँ, शाह आलम के शाही हकीम थे तथा नारनौल परगने में कुछ जागीर मिली हुई थी। अंग्रेज़ों के सत्ता ग्रहण करने पर उनको पेंशन मिलने लगी, जिसका एक भाग मोमिन ख़ाँ को भी मिलता था।

मोमिन ने शाह अब्दुल क़ादिर से अरबी की शिक्षा प्राप्त की। तत्पश्चात अपने पिता व चचाओं से यूनानी चिकित्साशास्त्र की शिक्षा ग्रहण की तथा उन्हीं के मतब में चिकित्सा कार्य करने लगे। परन्तु यह कार्य केवल उनके मन बहलाव का साधन था। उनकी बुद्धि प्रखर तथा स्मृति तीव्र थी।

मिर्ज़ा ग़ालिब की भाँति मोमिन भी प्राचीन व्यवस्था के अभिजात्य वर्ग से संबंधित थे तथा समय परिवर्तन के साथ संगति बैठाने में कठिनाई अनुभव कर रहे थे। उन्होंने दिल्ली कॉलेज में फ़ारसी के प्रोफ़ेसर पद का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया था। इसी प्रकार महाराजा कपूरथला का 350 रूपये प्रति मास का प्रस्ताव इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि महाराजा के दरबार का एक साधारण गवैया भी यही वेतन प्राप्त कर रहा था। एक अन्य अवसर पर, टोंक के नवाब

वज़ीरुद्दौला ने उनके समक्ष टोंक में निवास करने का प्रस्ताव रखा परन्तु दिल्ली प्रेम के कारण उन्होंने उसे भी अस्वीकार कर दिया।

अन्य शायरों की भांति मोमिन ने कविता को अपनी जीविका का साधन नहीं बनाया। यह उनका प्रिय व्यसन था जो क्रमिक विकास द्वारा उनके संवेदना में गहरा प्रवेश कर, उनके अस्तित्व का अनिवार्य अंग बन गया।

मोमिन ने एक दीवान की रचना की जिसको उनके शिष्य शेफ़्ता ने संकलित किया तथा करीमुद्दीन ने 1746 में प्रकाशित किया। उन्होंने छह मसनवियां, कुछ पहेलियां तथा अन्य रूपों में भी रचना की। सन् 1852 ई0 में घर की छत से गिर जाने के कारण उनकी मृत्यु हो गयी।

16. 'ज़फ़र' (1775–1862):–

मिर्ज़ा अबुल मुज़फ़्फ़र सिराजुद्दीन मुहम्मद बहादुर शाह, जिनका तख़ल्लुस 'ज़फ़र' था, अंतिम मुग़ल बादशाह थे। उनका जन्म 1775 ई0 में हुआ था। वे 1837 में सिंहासनासीन हुए। वे एक बादशाह की अपेक्षा शायर अधिक थे तथा इसी रूप में सप्रेम स्मरण किये जाते हैं। पहले वे ज़ौक़ के शागिर्द एवं मित्र थे, तदुपरांत ग़ालिब के हुए।

ज़फ़र केवल उर्दू के प्रतिभाशाली शायर ही नहीं थे, वरन फ़ारसी के विद्वान और अद्भुत सुलेखक (कातिब) भी थे।

सन् 1858 में बहादुर शाह ज़फ़र को सिंहासन से उतार कर रंगून निर्वासित कर दिया गया जहां वे एक दरवेश की भांति रहे तथा 1862 ई0 में उनकी मृत्यु हुई।

एक कवि के रूप में ज़फ़र की प्रसिद्धि 'मुख्यतः उनके ग़ज़लों के दीवान पर आधारित है जो अत्यधिक लोकप्रिय है। कुछ लोग ज़फ़र की अधिकांश ग़ज़लों का श्रेय उनके शायरी के उस्तादों ज़ौक़ तथा ग़ालिब को देते हैं। इस विचार में कुछ सच्चाई हो सकती है, परन्तु तथ्य यह है कि ज़फ़र स्वयं एक अच्छे शायर थे तथा उनकी अधिकांश ग़ज़लें उन्हीं के द्वारा रचित हैं।

17. 'अख़्तर' (1827–1887):–

लखनऊ के उन समस्त नवाबों में, जो स्वयं कवि थे, वाजिद अली शाह सर्वाधिक प्रबुद्ध थे। वे शायरी के प्रेमी थे तथा 'अख्तर' नाम से रचनाएं करते थे। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में सन् 1847 में सिंहासनारूढ़ हो कर केवल 1856 तक शासन किया, इस वर्ष अंग्रेज़ों ने उन्हें गद्दी से उतार कर कलकत्ता निर्वासित कर दिया।

वाजिद अली शाह, अमजद अली शाह (1842–47), जो कला और साहित्य के संरक्षक थे, के बड़े बेटे थे।

वाजिद अली शाह एक सिद्धहस्त लेखक थे। उनकी कुछ अत्यधिक महत्वपूर्ण रचनाएं निम्नलिखित हैं–

(1) ग़ज़लों के छह दीवान– 'शुआ–ए–फ़ैज़', क़मर–ए–मज़मून, 'सुख़न–ए– अशरफ़', 'गुलदस्ता–ए–आशिक़ां', 'अख़्तर–ए–मुल्क' तथा 'नज़्म–ए–नामवर' शीर्षकों से संग्रहीत हैं। (2) अनेक मसनवियां जिनमें, 'हुज़्न–ए–अख़्तर', 'ख़िताबात–ए–महल्लात', 'बानी', 'नाज़ा', 'दुल्हन', 'दरफ़न–ए–मौसीक़ी', दरिया–ए–तअश्शुक़', विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। (3) मरसियों के तीन संग्रह (4) क़सायदुल–मुबारक' जिसमें उर्दू तथा फ़ारसी में क़सीदे हैं (5) 'मुबाहिसा बैनुल नफ़्सुलअक़्ल' (6) 'सहीफ़ा–ए–सुल्तानी,
(7) 'नसाह–ए–अख़्तरी'
(8) 'इश्क़नामा'
(9) 'रिसाल–ए–ईमान'
(10) 'दफ़्तर–ए–परीशां
(11) 'मक़तले–मोतबर'
(12) 'दस्तूर–ए–वाजिदी',
(13) 'सौतुल–मुबारक'
(14) 'हैबत–ए–हैदरी'
(16) 'जौहर–ए–उरूज़'
(17) 'इरशाद–ए–ख़ाक़ानी' आदि।

❖❖❖

स्वास्थ्य

गर्मियों में खाएं शहतूत, नहीं लगेगी लू

डॉ0 चारू गाबा, लखनऊ

गर्मी के मौसम में कई तरह के स्वादिष्ट और रसीले फल मिलते हैं। ऐसा ही एक फल है शहतूत। यह खाने में जितना स्वादिष्ट होता है, उतना ही सेहत के लिए फायदेमंद भी होता है। इसमें विटामिन ए, विटामिन सी, आयरन, पोटैशियम, फास्फोरस और एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे पोषक तत्व पाये जाते हैं। गर्मियों में इसका सेवन करने से शरीर को कई फायदे मिलते हैं। आइए जानते हैं इन फायदों के बारे में।

इम्यूनिटी मजबूत करेः—

इसमें विटामिन सी और एंटीऑक्सीडेंट्स तत्व मौजूद होते हैं, जो इम्यूनिटी बूस्ट करने में मदद करते हैं। गर्मियों में इसे खाने से लू नहीं लगती है और मौसमी बीमारियों से बचाव होता है।

पाचन तंत्र दुरुस्त रखेः—

इसका सेवन पेट के लिए काफी फायदेमंद माना जाता है। इसमें फाइबर मौजूद होता है, जो पाचन तंत्र को दुरुस्त रखता है। इसे खाने से पेट में दर्द, सूजन, ब्लोटिंग और कब्ज़ जैसी पाचन संबंधी समस्साएं दूर होती हैं।

वजन कम करेः—

इसमें डाइटरी फाइबर होता है, ऐसे में इसे खाने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है। भूख जल्दी से नहीं लगती है और ओवरइटिंग से बचाव होता है। इस तरह से शहतूत वजन घटाने में कारगर साबित होता है।

आँखों की रोशनी बढ़ाएः—

इसमें विटामिन ए भरपूर पाया जाता है। यह आँखों की रोशनी बढ़ाने के साथ उन पर आने वाले तनाव को दूर कर सकता है। रेटिना से संबंधित दोषों को भी दूर करने में यह मददगार साबित हो सकता है।

दिल के लिए फायदेमंदः—

इसमें मौजूद फाइबर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रण में रखने में मदद करता है। साथ ही इसमें मौजूद पोटैशियम हाई ब्लड प्रेशर को कम करने में कारगर होता है। इसके अलावा यह रक्त के थक्के, स्ट्रोक और दिल के दौरे की संभावनाओं को कम करता है।

शहतूत में मौजूद फाइबर कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नियंत्रण में रखने में मदद करता है। साथ ही इसमें मौजूद पोटैसियम हाई ब्लड प्रेशर को कम करने में कारगर होता है। इसके अलावा यह रक्त के थक्के, स्ट्रोक और दिल के दौरे की संभावनाओं को कम करता है।

नोटः— शहतूत का सेवन सीमित मात्रा में करना सेहत के लिए फायदेमंद है। कोई बीमारी या एलर्जी है तो डॉक्टर से पूछ कर ही इसका सेवन करें।

(आयुष अस्पताल कल्ली पश्चिम, लखनऊ)

अपने पाठकों से

- हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं।
- हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम लिखने वालों से अनुरोध करते हैं कि वह अपने मूल्यवान निबन्धों से हमारा सहयोग करें।
- आप हिन्दी भाषियों को ''सच्चा राही'' पढ़ने का मशवरा दें।
- आप ''सच्चा राही'' के ग्राहक बना कर ''सच्चा राही'' को सहयोग दें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके हल लिख कर ''सच्चा राही'' में प्रकाशित करेंगे।

आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के ✆ नं0 9450784350 का प्रयोग करें।

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

रजब तय्यब अर्दोगान ने तीसरी बार ली तुर्किये राष्ट्रपति पद की शपथः—

तुर्किये के मौजूदा राष्ट्रपति रजब तय्यब अर्दोगान ने विपक्षी उम्मीदवार कमाल कलचदारगुलू पर 28 मई के ''रन ऑफ'' में शानदार और निर्णायक जीत हासिल करके तीसरे कार्यकाल के लिए एक शानदार और भव्य समारोह में ''प्रेसीडेंशियल पैलेस'' में राष्ट्रपति पद की शपथ भी ले ली, उस भव्य शपथ ग्रहण समारोह में 81 देशों की अहम शख्सियात, 21 देशों के राष्ट्रपति, 13 देशों के प्रधानमंत्री, और अन्य के दूसरे जिम्मेदारों और नुमाइंदों ने भाग लिया, इसी प्रकार नाटो और ओ0आई0सी0 और तुर्क देशों की एक इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन के सेक्रेटरीज ने भी शिरकत की, जिससे उस शपथ ग्रहण समारोह की भव्यता का ब खूबी अंदाज़ा लगाया जा सकता है।

रजब तय्यब अर्दोगान ने अपने पद और गोपनीयता की शपथ उठाने से पहले अल्लाह का शुक्र अदा किया और अपनी जीत को अवाम की जीत करार दिया, और अपने इस अज्म व इरादे का इज़हार किया कि मैं पूरी निष्ठा भाव से संविधान और लोकतांत्रिक मूल्यों को क़ायम रखूंगा, और तर्की की अर्थव्यवस्था को मज़बूत करने और दुनिया भर के देशों के साथ अम्न व सलामती की फज़ा क़ायम करने की पूरी कोशिश करूंगा।

देश में तंबाकू छोड़ने वाले सबसे अधिक उत्तर प्रदेश केः— सर्वे

केन्द्र सरकार के अधीन काम करने वाली नैशनल टोबेको क्विटलाइन सर्विसेज (एनटीक्यूएलएस) के सर्वेक्षण के मुताबिक देश में सबसे अधिक तंबाकू छोड़ने वाले उत्तर प्रदेश के लोग हैं। सर्वेक्षण के नतीजों को 'विश्व तंबाकू निषेध दिवस' के उपलक्ष्य में 31 मई को वल्लभ भाई पटेल चेस्ट इंस्टिट्यूट (वीपीसीआई) ने जारी किया।

वीपीसीआई का अध्ययन एनटीक्यूएलएस के आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें खुलासा हुआ कि 30 अप्रैल, 2016 से 30 मई 2023 तक 71,39,473 इंटरएक्टिव वॉइस रिस्पांस (आईवीआर) कॉल आए। केन्द्र पर आई कुल 20,43,227 आवीआर कॉल में परामर्श दिया गया। सर्वेक्षण के मुताबिक 1,56,644 यानी 40 प्रतिशत लोगों ने तंबाकू का सेवन छोड़ दिया। इनमें से सबसे अधिक 1,23,508 उत्तर प्रदेश के थे।

दिल दहलाने वाला भीषण रेल हादसाः—

ओडिशा के बालासोर में 2 जून 2023 को शाम 7 बजे कोरोमण्डल एक्सप्रेस, बेंग्लुरु—हावड़ा एक्सप्रेस और एक मालगाड़ी के बीच हुए भीषण हादसे ने मिन्टों और सेकेन्डों में सैकड़ों लोगों की जान ले ली और हज़ारों लोग घायल हो गये, इसे भारतीय रेल इतिहास का अब तक का तीसरा सबसे बड़ा और भीषण हादसा कहा जा रहा है जानकारी के मुताबिक इस हादसे में अब तक 288 यात्रियों की मौत हो चुकी है और 900 के करीब लोग घायल हैं जिनका निकटतम अस्पतालों में इलाज चल रहा है लेकिन बहुत से परिवार हफ़्तों गुज़रने के बाद भी लाशों के ढेर में अपनों को तलाश कर रहे हैं जिनका कुछ भी पता नहीं चल रहा है।

अच्छी बात है कि भारत सरकार ने जान गंवाने वालों के परिवारों को 10—10 लाख रूपये, गम्भीर रूप से जख़्मी लोगों के लिए दो लाख रूपये और मामूली रूप से चोटिलों के लिए 50,000 सहायता का एलान किया है वहीं राज्य सरकारों ने भी सहायता की बात कही है। ◆◆

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ ۔ ٹیگور مارگ
لکھنؤ ۔ ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/07/2023 ________ تاریخ ________

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल ह़ई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्ड़िंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/– (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **8736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–:तअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961** के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 22 - Issue 05

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3